फरवरी, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 2

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

तिब्बत की पूर्व राजनीतिक कैदी नामक्यी ने जिनेवा में १७वें मानवाधिकार और लोकतंत्र शिखर सम्मेलन में भाषण दिया

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

फरवरी, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 2

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचारों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

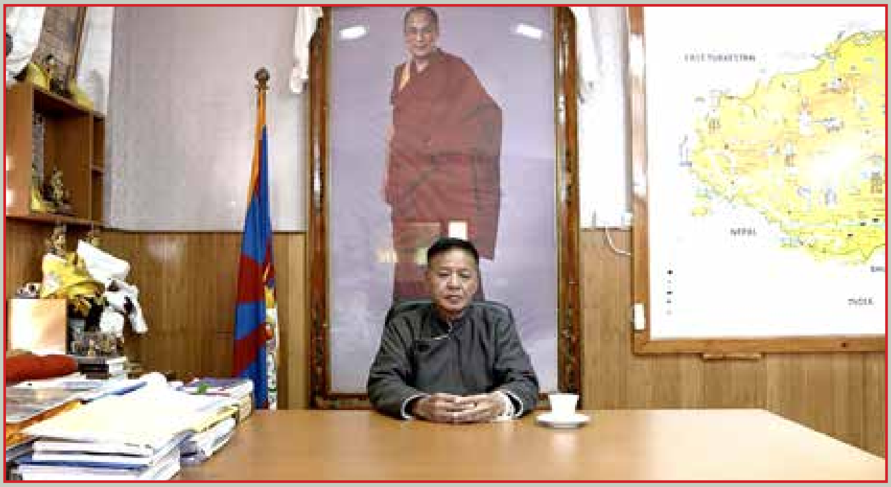

१६वें कशाग के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बतियों को तिब्बती नववर्ष 'लोसर' २१५२ की शुभकामनाएं दीं

समाचार -

समाचार -

Contents

1. परम पावन दलाई लामा ने बायलाकुप्पे में २५,००० भक्तों को दीर्घायु का आशीर्वाद दिया 2
2. बाइलाकुप्पे में डेढ़ महीने प्रवास के बाद परम पावन दलाई लामा धर्मशाला लौटे 3
3. कसूर ग्यालो थोंडुप (१९२८-२०२५) 3
4. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने परम पावन १४वें दलाई लामा से मुलाकात की, आधिकारिक यात्रा के तीसरे दिन स्कूल का दौरा किया 4
5. सिक्योंग ने बायलाकुप्पे में तीन दिवसीय तिब्बती कृषि सम्मेलन का उद्घाटन किया, युवाओं को खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया 5
6. सुरक्षा समीक्षा कर केंद्र ने दलाई लामा को जेड श्रेणी सुरक्षा प्रदान की 5
7. क्याब्जे योंगज़िन लिंग रिनपोछे ने दिल्ली सम्येलिंग में अमितायस को दीर्घायु अभिषेक प्रदान किय 6
8. १६वें कशाग के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बतियों को तिब्बती नववर्ष 'लोसर' २१५२ की शुभकामनाएं दीं 6
9. कलोन डोल्मा ग्यारी ने पांचवें हिमालय हिंद महासागर राष्ट्र समूह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र में भाग लिया 7
10. कलोन डोल्मा ग्यारी ने प्रयागराज में ऐतिहासिक 'बुद्ध विशेष संगम महाकुंभ' और 'बोध महाकुंभ यात्रा' में भाग लिया 7
11. स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने इंग्लैंड के ऑल पार्टी पार्लियामेंटरी ग्रुप ऑन तिब्बत के औपचारिक गठन को लेकर आभार व्यक्त किया 8
12. निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल ने लोसर पर तिब्बतियों को बधाई दी 8
13. सांसद कर्मा गेलेक और लोबसंग थुप्टेन पोंटसांग का चेन्नई दौरा संपन्न 9
14. भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने महाकुंभ में नागरिक समाज से संपर्क अभियान चलाया 10
15. तिब्बती और उनके जापानी समर्थकों ने तिब्बती स्वतंत्रता दिवस की पुनः पुष्टि की ११२वीं वर्षगांठ मनाया 10
16. लोसर के पहले दिन सीटीए नेतृत्व और कर्मचारियों ने सुगलागखांग में सेतोर चढ़ाया 10
17. तिब्बती युवा पक्षधरता प्रशिक्षण के दौरान ब्लू माउंटेंस सिटी काउंसिल द्वारा तिब्बती ध्वज फहराया गया 11
18. चीनी संपर्क अधिकारी सांगेय क्याब ने चीन के अंदर धार्मिक उत्पीड़न के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन में भाग लिया 11
19. तिब्बत संग्रहालय में परम पावन दलाई लामा की जीवन गाथा पर अमेरिकी प्रदर्शनी दौरा संपन्न 12
20. तिब्बत की पूर्व राजनीतिक कैदी नामक्यी ने जिनेवा में १७वें मानवाधिकार और लोकतंत्र शिखर सम्मेलन में भाषण दिया 12
21. तिब्बतियों और उग्यूरों के खिलाफ चीन दुनिया भर में दमन चक्र चला रहा : स्विट्जरलैंड 13
22. सीसीपी से युन्नान के दो वरिष्ठ तिब्बती अधिकारी बर्खास्त 14
23. प्रतिरोध की खामोश लपटें: तिब्बत के अंदर आत्मदाह करने वाले पहले तिब्बती टेपे की याद 14
24. तिब्बती समुदाय ने यूएनएचआरसी के ५८वें सत्र के शुरू होने पर जिनेवा में विरोध-प्रदर्शन किया, तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन का मुद्दा उठाया 15
25. यूरोपीय संघ की वैश्विक मानवाधिकार चर्चा की प्राथमिकता में तिब्बत बना हुआ है 16

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा

नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

प्रयागराज महाकुंभ से तिब्बती संघर्ष को मिली नई ऊर्जा

ik0 ';keukFk feJ
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

विष्व स्तर पर तिब्बत संबंधी जागरुकता बढ़ती जा रही है, इसका प्रषंसनीय प्रमाण प्रयागराज महाकुंभ, 2025 में देखने को मिला। गत 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चले इस आयोजन में लगभग 67 करोड़ सनातनी प्रयागराज पहुँचे और कुंभस्नान किया। ओल्ड जी.टी. रोड से सटे लोअर संगम मार्ग स्थित बौद्ध विषेश षिविर (समागम या संगम) में उन्होंने बौद्ध दर्षन एवं तिब्बती परंपरा के दर्षन किये। तिब्बत को वे आध्यात्मिक–सांस्कृतिक भारत का अभिन्न अंग मानते हैं। हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा ने बौद्ध विषेश षिविर का भव्य–दिव्य आयोजन किया था। इसमें उसे कुछ अन्य संस्थानों का भी रचनात्मक सहयोग मिला था।

हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा ने 2013 के प्रयागराज महाकुंभ में हिमकैट (हिमालयन कमिटी फॉर एक्सन ऑन तिब्बत) द्वारा प्रकाषित तिब्बत संबंधी करोड़ों पैम्फलेट बाँटे–बँटवाये थे। अभी 2025 के प्रयागराज महाकुंभ में भारत–तिब्बत समन्वय केन्द्र ने बौद्ध विषेश षिविर आकर तिब्बत संबंधी पुस्तक–पुस्तिकाओं का उत्साहपूर्वक वितरण किया। हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रद्धेय गेषे लामा चोसफेल जोत्पा ने अपने कार्यकर्ताओं से कुंभक्षेत्र में कई जगह इन सामग्रियों का वितरण कराया। मुझे भी 2013 में तीन सप्ताह और 2025 में लगभग दो माह तक प्रयागराज कुंभक्षेत्र में तिब्बती साहित्य–वितरण में षामिल रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लोग तिब्बत संबंधी साहित्य ध्यानपूर्वक पढ़–समझ रहे थे। बौद्ध विषेश षिविर में विभिन्न देषों से आये बौद्ध विद्वान् एवं तिब्बती विषेशज्ञ उनकी जिज्ञासायें षांत कर रहे थे। कई लोग जानना चाहते थे कि जब 1959 तक तिब्बत एक स्वतंत्र देष था तब चीन से सिर्फ वास्तविक स्वायत्तता की मांग क्यों? यह वास्तविक स्वायत्तता क्या तिब्बत की वर्तमान स्वायत्तता से भिन्न है? इन प्रष्नों के उत्तर में उन्हें बताया जाता था कि तिब्बत स्वतंत्र देष ही था, जिस पर साम्यवादी चीन ने अंतरराश्ट्रीय कानून, लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मानवीय आदर्षों की पूर्णतः उपेक्षा कर अवैध नियंत्रण कर लिया। तब से चीन सरकार लगातार साजिषपूर्वक तिब्बत के पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन, षिक्षा, संस्कृति, इतिहास तथा गौरवषाली परंपरा का विनाष कर रही है। बौद्ध मठ, मंदिर, स्थल, षैक्षणिक एवं अन्य बौद्ध संस्थान विध्वंस के षिकार हैं। वहाँ मानवाधिकारों का क्रूरतापूर्ण हनन लगातार जारी है। चीन सरकार तिब्बती पहचान मिटाने के लिये तिब्बती नामों की जगह चीनी नाम थोप रही है। तिब्बती बच्चों को चीनी स्कूलों में पढ़ाकर उन्हें तिब्बत से घृणा सिखाई जा रही है। तिब्बती अपने तिब्बत में ही अल्पसंख्यक हो गये क्योंकि चीनी लोगों की संख्या काफी हद तक बढ़ गई है। षासन–प्रषासन और व्यापार आदि पर चीनियों का नियंत्रण है। तिब्बती अपने घर में ही निम्नश्रेणी के बना दिये गये हैं।

पूर्ण आजादी की जगह सिर्फ वास्तविक स्वायत्तता मिल जाये तो कम– से– कम तिब्बती पहचान बच जायेगी। यह स्वायत्तता चीन के संविधान तथा उसके राश्ट्रीयता संबंधी कानूनों के अनुकूल है। प्रतिरक्षा और विदेष मंत्रालय चीन सरकार रखे। षिक्षा, कृशि समेत अन्य सभी विशय तिब्बतियों को सौंप दे। इससे चीन सरकार की संप्रभुता तथा भौगोलिक एकता–अखंड. ता सुरक्षित रहेगी और तिब्बतियों को स्वषासन का अधिकार मिल जायेगा। इसे ही ''मध्यममार्ग नीति'' कहा जाता है जिसके समर्थन में विष्वजनमत लगातार बढ़ रहा है।

लोगों को यह भी बताया गया कि चीन सरकार ने तिब्बत को स्वायत्तता देने के नाम पर उसका अंगभंग कर रखा है। उसने उसके बड़े क्षेत्र को चीनी भूभाग में मिला लिया है। चीन सरकार वास्तविक स्वायत्तता प्रदान करे अर्थात् तिब्बत के वास्तविक भौगोलिक क्षेत्र को स्वायत्तता प्रदान करे। वह स्वायत्तता मध्यममार्ग नीति के अनुकूल हो। लोग इस तथ्य से सहमत थे कि तिब्बत समस्या का समाधान भारत के हित में है। भारत की षांति, सुरक्षा, समृद्धि तथा स्वाभिमान के लिये तिब्बती आंदोलन में अपनी भूमिका को और बढ़ाना हम भारतीयों का राश्ट्रीय कर्तव्य है। भारत–चीन संबंध तभी मजबूत और विष्वसनीय होंगे।

तिब्बत सहित सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र में प्रचलित प्राचीन सोवा रिग्पा चिकित्सा प्रणाली को भारत सरकार के आयुश मंत्रालय ने भी भारत की पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में स्थान दिया है। भगवान् बुद्ध के समय से प्रचलित तथा लोकप्रिय सोवा रिग्पा जाँच, परामर्ष एवं दवा वितरण केन्द्र पर बौद्ध विषेश षिविर में सदैव भीड़ रहती थी। केन्द्रीय सोवा रिग्पा संस्थान, लेह के विषेशज्ञों से लोगों को प्रामाणिक जानकारी मिल रही थी। वे उनसे भारत की अन्य पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों से सोवा रिग्पा की विषिश्टता जान–समझ रहे थे। चिकित्सा केन्द्र के साथ ही आकर्शक प्रदर्षनी भी लगी थी जिसमें कई दुर्लभ तथ्य प्रदर्षित किये गये थे।

भारत तिब्बत मैत्री संघ, भारत तिब्बत सहयोग मंच, विष्व हिन्दू परिशद् एवं राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समेत कई महत्वपूर्ण संगठनों के कार्यकर्ता कैलाष मानसरोवर की चीनी चंगुल से मुक्ति के लिये जागरुकता अभियान चला रहे थे। तिब्बत पर चीनी नियत्रंण के पूर्व तिब्बती बौद्ध भारत स्थित पवित्र बौद्ध स्थलों की आध्यात्मिक यात्रायें बेरोकटोक करते थे। इसी प्रकार सनातनी भारतीय भी तिब्बत स्थित कैलाष मानसरोवर यात्रा करते रहते थे। अब चीन सरकार ने इस आध्यात्मिक यात्रा को अषुभ लाभ का साधन बना लिया है। नियम एवं अन्य षर्तें भी कठोर हैं। स्पश्ट है कि कैलाष मानसरोवर यात्रा पर जाना बहुत मुष्किल हो गया है। प्रयागराज के महाकुंभ ने तिब्बती आंदोलन को नई ऊर्जा एवं गति प्रदान की है। सेक्टर 18 स्थित बौद्ध विषेश षिविर से संचालित यह जागरुकता तिब्बती आंदोलन को और अधिक व्यवस्थित करेगी, इसमें कोई संदेह नहीं।

◆ 1.परम पावन दलाई लामा ने बायलाकुप्पे में २५,००० भक्तों को दीर्घायु का आशीर्वाद दिया

१३ फरवरी, २०२५

बायलाकुप्पे (कर्नाटक)। आज १३ फरवरी को परम पावन दलाई लामा को ताशी ल्हुनपो मठ के वार्तालाप प्रांगण में व्हाईट तारा पर आधारित दीर्घायु आशीर्वाद प्रदान करना था। यह व्हाईट तारा असल में 'अमरता की अमृत धारा' नामक इच्छा-पूर्ति चक्र है। इस अनुष्ठान की रचना परम पावन के रीजेंट और शिक्षक न्गवांग सुंगराब थुटोप नाम के तकदक रिनपोछे ने की थी।

मंदिर में भिक्षुओं और भिक्षुणियों की भारी भीड़ जमा थी, जबकि इससे भी अधिक भिक्षु-भिक्षुणियाँ और आम जन वार्तालाप प्रांगण में एक विशाल शामियाने के नीचे बैठे थे। आशीर्वाद ग्रहण करने के लिए लगभग २५,००० भक्त एकत्रित हुए थे। इनमें से कई तो कर्नाटक के ही विभिन्न तिब्बती बस्तियों से आए थे। परम पावन गोल्फ कार्ट में सवार होकर मंदिर से नीचे आए और अपने आसन तक पैदल गए। जब वह बैठ गए तो ‹त्रिरत्नों› की प्रार्थना की गई। इसके बाद चाय, रोटी और खीर वितरित किए गए। इसके साथ ही उन्हें अर्पित करने और आशीर्वाद देने के लिए छंद कहे गए। सभा को संबोधित करते हुए परम पावन ने याद किया कि पाल्डेन ल्हामो ने उन्हें एक सपने में बताया था कि वह ११० साल तक जीवित रह सकते हैं। उन्होंने कुछ समय पहले की एक घटना का भी जिक्र किया, जब वह बोधगया में थाई मंदिर में एक बैठक में भाग ले रहे थे। परम पावन ने कहा कि उन्हें बुद्ध का स्पष्ट दर्शन हुआ और ऐसा लग रहा था कि बुद्ध उनसे प्रसन्न हैं।

बुद्ध धर्म दुनिया भर में फैला है। यह उन जगहों तक भी पहुंच गया है, जहां पहले से ऐतिहासिक रूप से बौद्ध धर्म का कोई संबंध नहीं था। मैं अनुभव करता हूं कि मैंने इसमें कुछ योगदान ही दिया है। मैंने अपने जीवन की शुरुआत में अपने शिक्षकों के पास बैठकर अध्ययन किया है और परिणामस्वरूप मैं अपने जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम बन पाया।

'समय का चक्र घूमा और तिब्बत की स्थिति ने मुझे वहां से पलायन करने और भारत में निर्वासन में आने के लिए विवश कर दिया। तब से दलाई लामा का नाम दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गया है। मुझे खुशी है कि मैं एक भिक्षु के लिए अनुशासन रूप में विनय की साधना करता रहा। इसके साथ ही सूत्र और तंत्र दोनों का अध्ययन भी जारी रखा।

'सुबह उठते ही मैं बोधिचित्त के जागृत मन और शून्यता के दृष्टिकोण पर ध्यान लगाता हूं। यह ध्यान मैं रोज करता हूं। मैंने हमेशा एक आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन जीने की कोशिश की है। मैंने ऐसे अनेक लोगों को दोस्त बनाया है, जो जरूरी नहीं कि बौद्ध धर्म में भी रुचि रखते हों।'

'इस तरह मैंने अपने युवा वर्ष तिब्बत में बिताए और फिर निर्वासन में आ गया। यहां मैंने अपना अधिकांश जीवन बिताया है। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मेरे सपनों के संकेत बताते हैं कि मैं ११० या उसके आसपास जीवित रहूँगा।' दर्शकों के बीच तालियां बज उठीं।

'मैं तिब्बती प्रांत अमदो के सिलिंग से हूं, जहां के लोग काफी बुद्धिमान होते हैं। मैंने बुद्ध की शिक्षाओं को अपनाया है, जिससे मेरा जीवन सार्थक हो गया है।

"आज, मैं व्हाईट तारा नामक दीर्घायु आशीर्वाद देने जा रहा हूं। सबसे पहले मुझे कुछ प्रारंभिक अभ्यास करने होंगे। जब मैं ऐसा करूं, तो कृपया मेरे साथ में तारा मंत्र का जाप करें।'
भक्तों की सभा में प्रवचन करते हुए परम पावन ने कहा :

'हमारा यह मानव जीवन अनमोल है और इसको पाकर हमें इसे सार्थक बनाना चाहिए। इसके लिए हमें बुद्ध की सम्यक उपदेश की आवश्यकता है और हमें नैतिकता, एकाग्रता और ज्ञान जैसे तीन प्रशिक्षणों के लिए तैयार होना चाहिए। अगर हम सम्यक तरीके से प्रशिक्षित होना चाहते हैं तो हमें लंबा जीवन जीना होगा। हम आर्य तारा जैसे देवता की अराधना करके अपने जीवन को लम्बा कर सकते हैं। आर्य तारा देवता ने कदम परंपरा का पालन करने वालों की देखभाल करने की प्रतिज्ञा कर रखी है।

'बोधिचित्त के संदर्भ में हमें सभी चार तंत्रों की साधना करनी चाहिए। इसलिए सबसे पहले आपको बोधिसत्व व्रत लेना होगा। बोधिचित्त प्रेरणा के बिना तांत्रिक साधना गलत दिशा में जा सकती है। आप जो भी तांत्रिक साधना करते हैं, वह बोधिचित्त पर आधारित होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि यह साधना परोपकार की इच्छा से प्रेरित होनी चाहिए। मैं इसी भावना से साधना करता हूं। मैं जिस क्षण जागता हूं, उसी क्षण से मैं बोधिचित्त उत्पन्न करता हूं। दिन के अंत में भी मैं बोधिचित्त को कभी नहीं भूलता। मैं बोधिचित्त के प्रति सचेत होकर सोता हूं। आप अपने मन में सोचते हैं कि आप जो भी साधना करेंगे, वह सभी प्राणियों के लाभ के लिए करेंगे। इस तरह आप अपना जीवन दूसरों की सेवा करने के लिए समर्पित कर देते हैं।'

परम पावन ने बोधिचित्त की साधना करने और बोधिसत्व व्रत लेने के लिए सभा में छंदों का पाठ किया और सभा से भी करवाया। फिर उन्होंने आशीर्वाद देने की प्रक्रिया शुरू की और इसके चरणों से गुजरते हुए शिष्यों को सलाह दी कि वे खुद को शून्य में विलीन होने की कल्पना करें। उनसे उन्होंने 'व्हाईट तारा' के रूप में उत्पन्न होने का अनुभव करने को कहा।

परम पावन ने आगे कहा, 'जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, मैं हर सुबह जब उठता हूं तो मैं बोधिचित्त और शून्यता के दृष्टिकोण का ध्यान करता हूं। अपने दैनिक जीवन में मैं अपने मन को इन दो साधनाओं की ओर बढ़ाने का प्रयास करता हूं, जिन्हें विधि और ज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। दैनिक आधार पर इन दो साधनाओं से प्रभावित होकर मैंने अपने जीवन के दिनों, हफ्तों, महीनों और वर्षों में अपने मन को बोधिचित्त और शून्यता से परिचित कराया है। यह सिर्फ़ श्लोकों और प्रार्थनाओं का पाठ करने की बात नहीं है, बल्कि इन सिद्धांतों को अपनी साधना का आधार बनाने की बात है। इस तरह हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।' जब आशीर्वाद कार्यक्रम संपन्न हो गया, तब परम पावन ने शिष्यों को प्रसन्न होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उन्हें सलाह दी कि अब से वे इच्छा-पूर्ति चक्र या 'व्हाईट तारा' को अपना संरक्षक देवता मानें।

सभा ने परम पावन को धन्यवाद ज्ञापन मंडल पेश किया और इस कार्यक्रम

का समापन 'सत्य वचनों की प्रार्थना' और समर्पण प्रार्थनाओं के साथ हुआ। इसके बाद परम पावन मुस्कुराते हुए और हाथ हिलाते हुए सभा सदस्यों को आशीर्वाद देते हुए वार्तालाप प्रांगण से मंदिर के बरामदे तक गए और और गोल्फ़-कार्ट में सवार होकर अपने कमरे में लौट गए।

◆ 2.बाइलाकुप्पे में डेढ़ महीने प्रवास के बाद परम पावन दलाई लामा धर्मशाला लौटे

२१ फरवरी, २०२५

धर्मशाला। परम पावन १४वें दलाई लामा बाइलाकुप्पे में लगभग छह सप्ताह और इसके बाद दो दिन के हुनसुर प्रवास के बाद आज २१ फरवरी की सुबह स्थानीय तिब्बतियों, भक्तों और शुभचिंतकों के उत्साहपूर्ण स्वागत के बीच विदा लेकर सुरक्षित रूप से धर्मशाला लौट आए।

यहां कांगड़ा हवाई अड्डे पर स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, कार्यवाहक सिक्योंग थारलाम डोल्मा चांगरा (शिक्षा विभाग की कालोन), धर्मशाला तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी कुंचोक मिग्मार और धर्मशाला में स्थित विभिन्न तिब्बती गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने परम पावन का गर्मजोशी से स्वागत किया।

इसके अलावा परम पावन का स्वागत करने के लिए तिब्बतियों की भारी भीड़ कई स्थानों पर एकत्रित हो गई थी। भीड़ में शामिल लोग पारंपरिक वस्त्र पहने हुए थे और हाथों में औपचारिक स्कार्फ (खटक) और धूपबत्ती लिए हुए थे। वे परम पावन को देखने और उनके वाहन के गुजरने पर उनकी एक झलक पाने के लिए उत्सुक थे।

सुगलागखांग के अंदर अपने आधिकारिक निवास के प्रवेश द्वार पर निर्वासित तिब्बती संसद और सरकार का प्रतिनिधिमंडल परम पावन की अगवानी के लिए कतार में खड़ा था। इसमें निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग, कालोन नोरज़िन डोल्मा, चुनाव आयुक्त लोबसंग येशी, लोक सेवा आयुक्त कर्मा येशी, निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सचिव शामिल थे।

बायलाकुप्पे में अपने प्रवास के दौरान परम पावन ने सेरा मठों, ताशी ल्हुनपो मठ और ग्युडमेड तांत्रिक मठ द्वारा की गई दीर्घायु प्रार्थनाओं की शृंखला में भाग लिया। परम पावन ने तिब्बत में हाल ही में आए विनाशकारी भूकंप के पीड़ितों के लिए एक प्रार्थना समारोह में भी भाग लिया और विभिन्न अवसरों पर ताशी ल्हुनपो मठ में शीतकालीन वाद-विवाद सत्र में भाग लिया। १३ फरवरी को परम पावन ने ताशी ल्हुन्पो मठ के वार्तालाप प्रांगण में क्षेत्र के भक्तों और अनुयायियों तथा विश्व भर से आए लोगों को व्हाईट तारा नामक इच्छा पूर्ति चक्र पर आधारित दीर्घायु आशीर्वाद प्रदान किया, जिसका शीर्षक था 'अमरता की अमृत धारा'।

◆ 3.कसूर ग्यालो थोंडुप (१९२८-२०२५)

१० फरवरी, २०२५ - तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी)

आधुनिक तिब्बती इतिहास के प्रमुख व्यक्तियों में से एक और परम पावन दलाई लामा के दूसरे सबसे बड़े भाई कसूर ग्यालो थोंडुप का १० फरवरी को भारत के पश्चिम बंगाल राज्य के कलिम्पोंग शहर स्थित उनके घर पर निधन हो गया। वे ९७ वर्ष के थे।

उनका जन्म पूर्वी तिब्बत के तक्सेर में हुआ था। इस गांव में परम पावन दलाई लामा का भी जन्म हुआ था। थोंडुप ने कई साल चीन के नानजिंग में अध्ययन किया। १९४९ में चीन और अंततः तिब्बत पर कम्युनिस्टों के कब्जे के बाद वे तिब्बती मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने वाले मुख्य व्यक्ति बन गए। वे अगले कई दशकों में कई अलग-अलग पहलों में शामिल रहे, जिनका उद्देश्य परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों का समर्थन करना था। इनका विवरण उनके संस्मरण 'द नूडल मेकर ऑफ़ कलिम्पोंग' में दिया गया है।

१९५० के दशक में उनके संपर्क में रहकर सीआईए ने तिब्बत पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के कब्जे के खिलाफ तिब्बती प्रतिरोध की सहायता के लिए अपना गुप्त कार्यक्रम शुरू किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में तिब्बती मुद्दे को उठाने के लिए ल्हासा में तिब्बती सरकार के साथ समन्वय भी किया। परिणामस्वरूप अंततः १९५९, १९६१ और १९६५ में महासभा द्वारा तीन प्रस्ताव पारित किए गए।

निर्वासित तिब्बती सरकार में भी उनकी सीधी भूमिका थी। उन्होंने १९६० के दशक में विदेशी मामलों को संभाला और १९९० के दशक की शुरुआत में कशाग (मंत्रिमंडल) के अध्यक्ष बने। इस बीच उन्होंने भारत के कलिम्पोंग में एक निवास के अलावा हांगकांग में एक आधार स्थापित किया।

१९७० के दशक के अंत में चीनी सरकार ने उनसे संपर्क किया और उन्हें परम पावन दलाई लामा से बात करने की इच्छा जताते हुए उन्हें संदेश देने को कहा। कसूर ग्यालो थोंडुप ने परम पावन दलाई लामा को चीनी राष्ट्रपति देंग शियाओपिंग का संदेश दिया कि 'स्वतंत्रता को छोड़कर अन्य सभी मुद्दों को बातचीत के माध्यम से सुलझाया जा सकता है'। परिणामस्वरूप परम पावन दलाई लामा के दूतों और चीनी नेतृत्व के बीच कई दौर की बातचीत हुई और धर्मशाला से तिब्बत के विभिन्न हिस्सों में कई तथ्य-खोज प्रतिनिधिमंडल भी गए। इस प्रकार वे परम पावन दलाई लामा के निजी दूत बन गए और उन्होंने चीन और तिब्बत की कई व्यक्तिगत यात्राएं कीं।

जब २००८ में एक चीनी अधिकारी ने कहा था कि देंग ने कभी ऐसा आश्वासन नहीं दिया था, तो थोंडुप ने धर्मशाला में मीडिया के सामने सार्वजनिक रूप से स्पष्टीकरण देते हुए कहा, 'यह मैं ही था जिससे दिवंगत सर्वोच्च नेता देंग शियाओपिंग ने १२ मार्च, १९७९ को कहा था कि 'स्वतंत्रता को छोड़कर अन्य सभी मुद्दों को बातचीत के माध्यम से सुलझाया जा सकता है।'

जब उनसे पूछा गया कि १९७९ में उन्होंने प्रतिरोध आंदोलन का नेतृत्व करने से लेकर चीनियों के साथ बातचीत करने की पहल करने तक अपना दृष्टिकोण

क्यों बदला, तो थोंडुप ने कहा कि तिब्बती समस्या को हल करने के लिए भारत और अमेरिका का समर्थन अपर्याप्त है। इस मुद्दे पर वास्तविक प्रगति के लिए चीनियों के साथ बातचीत जरूरी है।

परम पावन दलाई लामा के विशेष दूत लोदी ग्यारी ने थोंडुप के साथ मिलकर काम किया था। लोदी ग्यारी अपने संस्मरण में कहते हैं, 'इसमें कोई संदेह नहीं है कि ग्यालो थोंडुप ने अपना पूरा जीवन तिब्बत मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने उस हर व्यक्ति, समूह या सरकार के साथ काम करने की कोशिश की जो इस मुद्दे में मदद कर सके। इनमें केएमटी, कम्युनिस्ट, अमेरिकी, भारतीय और यहां तक कि एक समय में रूसी भी शामिल थे। यह सब इस कारण से था क्योंकि वे इस मुद्दे के प्रति बहुत प्रतिबद्ध थे।'

तिब्बती मुद्दे को उठाने का कारण बताते हुए थोंडुप ने २००८ में कहा था, 'मेरा उद्देश्य तिब्बत के मामले की पैरवी करना है। मुझे उम्मीद है कि चीन की सरकार उचित दृष्टिकोण अपनाएगी और हमारे साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेगी।'उन्होंने स्वीकार किया कि, 'हां, (२००२ से बातचीत के मौजूदा दौर से) कोई परिणाम नहीं निकला है, लेकिन अगर कोई परिणाम नहीं निकलता है तो भी हम उम्मीद नहीं खोने वाले हैं। चीजें बदल रही हैं, दुनिया बदल रही है मैं काफी आशावादी हूं।'

उनकी पत्नी डिकी डोलकर (झू डैन) और बेटी यांगज़ोम डोमा का निधन उनसे पहले हो चुका। वे अपने पीछे बेटे- न्गावांग तान्पा थोंडुप, खेद्रोब थोंडुप और उनके परिवार छोड़ गए हैं। परम पावन दलाई लामा के अलावा, अब उनके जीवित भाई-बहनों में जेट्सन पेमा और तेंदज़िन चोएग्याल हैं।

◆ 4.सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने परम पावन १४वें दलाई लामा से मुलाकात की, आधिकारिक यात्रा के तीसरे दिन स्कूल का दौरा किया

१४ फरवरी, २०२५

बाइलाकुप्पे। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग (अध्यक्ष) सह गृह विभाग के कलोन (मंत्री) पेन्पा शेरिंग को १४ फरवरी २०२५ की सुबह परम पावन १४वें दलाई लामा के विशेष दर्शन का अवसर मिला।

सिक्योंग के साथ भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री माननीय श्री बंदी संजय कुमार और उनका प्रतिनिधिमंडल भी था। श्री संजय कुमार के साथ प्रतिनिधिमंडल में उनके निजी सचिव आईएएस आंद्रा वामसी, मंत्री के अतिरिक्त निजी सचिव श्रीनिवास परिमाला और मंत्री के अतिरिक्त निजी सचिव मधु पासुनुरु शामिल थे।

परम पावन के दर्शन के समय कर्नाटक के गृह मंत्री डॉ. गंगाधरैया परमेश्वर, उनकी पत्नी कनिका परमेश्वरी परमेश्वर और चार अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे।

दिन की शुरुआत परम पावन दलाई लामा के आशीर्वाद से हुई, उसके बाद कलोन (मंत्री) डोल्मा ग्यारी ने भारत सरकार के प्रतिनिधियों के साथ शिष्टाचार मुलाकात की।

बाद में सिक्योंग ने बाइलाकुप्पे में तिब्बती चिल्ड्रेन विलेज (टीसीवी) स्कूल का दौरा किया, जहां निदेशक शेरिंग दोरजी और प्रिंसिपल नामग्याल शेरिंग ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। स्कूल के मुख्य कार्यालय में इसकी वर्तमान स्थिति के बारे में संक्षिप्त चर्चा के बाद उन्होंने १२वीं की दो अलग-अलग कक्षाओं में जाकर छात्रों के साथ बातचीत की।

सिक्योंग ने छात्रों को आगामी परीक्षाओं के लिए अच्छी तरह से तैयारी करने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन उन्हें यह भी याद दिलाया कि वे अनावश्यक तनाव न लें। सिक्योंग ने सलाह दी, 'स्मार्ट तरीके से पढ़ाई करें और खुद पर बहुत ज़्यादा बोझ न डालें। हम भारत में कई छात्रों के बारे में सुनते हैं जो अत्यधिक शैक्षणिक दबाव से जूझ रहे हैं, कभी-कभी दुखद परिणाम भी सामने आते हैं। उचित समय प्रबंधन आपको बिना किसी दबाव के अच्छा प्रदर्शन करने में मदद करेगा।'

सिक्योंग ने संतुलन के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, 'परीक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन परीक्षा ही सब कुछ नहीं हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने समय और प्रयासों का प्रबंधन कितनी अच्छी तरह करते हैं।'

छात्रों के साथ बातचीत के बाद सिक्योंग ने स्कूल प्रशासन से मुलाकात की और दक्षिण भारत में तिब्बती बच्चों को शिक्षा और स्थिरता प्रदान करने में टीसीवी की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने कहा, 'टीसीवी ने हमारे समुदाय की जरूरतों को पूरा करने और हमारी युवा पीढ़ियों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।'

टीसीवी दौरे के बाद सिक्योंग संभूत तिब्बती स्कूल (एसटीएस) गए, जहां स्कूल के गेट पर छात्रों और कर्मचारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रिंसिपल दावा ताशी की अगुवाई में उन्होंने कई कक्षाओं का दौरा किया और उसी स्कूल में एक छात्र के रूप में अपने समय की यादें साझा कीं।

छात्रों के साथ चर्चा के दौरान सिक्योंग ने शिक्षा और चरित्र दोनों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने सलाह दी, 'अगर आप अच्छे शिष्टाचार और अनुशासन का प्रदर्शन नहीं करते हैं तो स्कूल में उच्च अंक प्राप्त करना भर ही पर्याप्त नहीं है। अपनी पढ़ाई के साथ-साथ, हमेशा अपने शिक्षकों का सम्मान करना और खुद को गरिमा के साथ पेश करना याद रखें।'

सिक्योंग ने कैलाशपुरा (एसटीएस) में संभूत प्री-प्राइमरी स्कूल, संभूत सीवीपी स्कूल और संभूत तिब्बती स्कूल का भी दौरा कर वहां के छात्रों और शिक्षकों से बातचीत की।

सिक्योंग की यात्रा का मुख्य आकर्षण टीसीवी में कक्षा १२ के छात्रों के साथ उनकी बातचीत और बायलाकुप्पे में विभिन्न तिब्बती स्कूलों का दौरा था। उनकी यात्रा से तिब्बती समुदाय के भीतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और छात्रों की भलाई के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की प्रतिबद्धता की पुष्टि हुई।

◆ 5.सिक्योंग ने बायलाकुप्पे में तीन दिवसीय तिब्बती कृषि सम्मेलन का उद्घाटन किया, युवाओं को खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया

२१ फरवरी, २०२५

बायलाकुप्पे। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के गृह विभाग द्वारा आयोजित तिब्बती कृषि सम्मेलन २० फरवरी को कर्नाटक के बायलाकुप्पे में जैविक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (ओआरटीसी) में शुरू हुआ, जिसमें गृह विभाग के वर्तमान कलोन (मंत्री) सिक्योंग पेन्पा शेरिंग मुख्य अतिथि थे। २० से २२ फरवरी २०२५ तक चलने वाले इस सम्मेलन का उद्देश्य तिब्बती बस्तियों में कृषि चुनौतियों का समाधान करना और टिकाऊ खेती के तरीके तलाशना रहेगा।

सम्मेलन हॉल में प्रवेश करने से पहले सिक्योंग ने इस परिसर के संचालन के बारे में पूरी जानकारी हासिल करने के लिए आसपास के कार्यालयों और मवेशी शेड का दौरा किया। इस कार्यक्रम में गृह विभाग (डीओएच) के सचिव पाल्डेन धोंडुप, दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी जिग्मे सुल्त्रिम, अतिरिक्त सचिव शेरिंग यूडन, डीओएच; ओआरटीसी के निदेशक शेरिंग दोरजी और भारत भर में कृषि आधारित विभिन्न तिब्बती बस्तियों के बस्ती अधिकारी और कृषि विस्तार अधिकारी के साथ ही गृह विभाग के कृषि अनुभाग के प्रतिनिधि शामिल हुए।

सम्मेलन की शुरुआत गृह सचिव पाल्डेन धोंडुप की टिप्पणियों से हुई, जिन्होंने निर्वासन में तिब्बती कृषि के विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने शुरुआती वर्षों से की गई महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डाला। शुरुआत में तिब्बती बस्तियों में बसने वालों ने सीमित कृषि ज्ञान के साथ केवल कुछ फसलें उगाईं। आधुनिक कृषि तरीकों पर चर्चा करते हुए उन्होंने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग के संभावित खतरों के बारे में चेतावनी दी और टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल तरीकों की आवश्यकता पर बल दिया।

सचिव के उद्घाटन भाषण के बाद सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने मुख्य भाषण दिया। इसमें उन्होंने तिब्बती बस्तियों में टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के लिए सीटीए की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। सिक्योंग ने कहा कि १९६० और ७० के दशक में तिब्बती बाशिंदे मुख्य रूप से निर्वाह खेती में लगे हुए थे, जो मक्का, आलू और बाजरा जैसी प्रमुख फसलों पर निर्भर थे। हालांकि, सीटीए और परम पावन दलाई लामा के आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण के नेतृत्व में पहल के समर्थन से तिब्बती खेती विकसित हुई है। ओरआरटीसी जैसे केंद्रों की स्थापना और आधुनिक तकनीकों को अपनाने से किसानों को फसलों में विविधता लाने, मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करने और जैविक कृषि पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिली है।

सिक्योंग ने रासायनिक उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भरता के महत्वपूर्ण मुद्दे पर भी अपनी बात रखकर गृह सचिव की चिंताओं को ही दोहराया। सिक्योंग ने जोर देकर कहा, 'हमें आधुनिक प्रगति और पारंपरिक ज्ञान के बीच संतुलन बनाना चाहिए।' सिक्योंग ने आगे जोर दिया कि जैविक खेती, जैसे खाद बनाना और प्राकृतिक कीट नियंत्रण, दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए तिब्बती कृषि प्रणाली का केंद्र बनना चाहिए।

सिक्योंग ने खेती में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता को एक महत्वपूर्ण बिंदु के तौर पर इंगित किया। कई युवा तिब्बती शहरी क्षेत्रों में पलायन कर रहे हैं और कृषि से दूर जा रहे हैं, सिक्योंग ने युवा पीढ़ी को खेती को एक व्यवहार्य और सम्मानजनक कैरियर के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि उचित प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के साथ, युवा तिब्बती कृषि को आधुनिक बनाने और अपने समुदायों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

अपने भाषण के निष्कर्ष के तौर पर सिक्योंग ने किसानों को निरंतर वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए सीटीए की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने तिब्बती बस्तियों और उनकी कृषि पहलों के निरंतर समर्थन के लिए भारत सरकार, विशेष रूप से कर्नाटक के प्रति आभार व्यक्त किया। तीन दिनों तक चलने वाले सम्मेलन में टिकाऊ खेती के तरीकों और तिब्बती कृषि के भविष्य पर आगे की चर्चा होगी।

सम्मेलन ने तिब्बती बस्ती अधिकारियों, कृषि विशेषज्ञों और किसानों को चल रही चुनौतियों पर चर्चा करने, ज्ञान का आदान-प्रदान करने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए रणनीतियों का प्रस्ताव करने के लिए मूल्यवान मंच प्रदान किया। प्रतिभागियों को प्रमुख कृषि मुद्दों पर चर्चा करने, सर्वोत्तम प्रणालियों को साझा करने और तिब्बती बस्तियों में टिकाऊ खेती के लिए कार्रवाई योग्य योजनाओं पर सहयोग करने के लिए समूहों में विभाजित किया गया था

◆ 6.सुरक्षा समीक्षा कर केंद्र ने दलाई लामा को जेड श्रेणी सुरक्षा प्रदान की

१७ फरवरी, २०२५

एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, खुफिया ब्यूरो की हालिया सुरक्षा समीक्षा रिपोर्ट के बाद केंद्र सरकार ने दलाई लामा को जेड श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की है।

पहले से हिमाचल प्रदेश पुलिस और अन्य एजेंसियों द्वारा दी जा रही तिब्बती आध्यात्मिक नेता की सुरक्षा अब सीआरपीएफ द्वारा की जाएगी, जिससे अद्यतन खुफिया जानकारी और संभावित खतरों से निपटने में अधिक समन्वित और उन्नत सुरक्षा प्रणाली सुनिश्चित होगी।

विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित व्यक्ति और तिब्बती बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक प्रमुख दलाई लामा चीनी कब्जे के कारण तिब्बत से भागने के बाद १९५९ से भारत में रह रहे हैं। भारत में उनकी उपस्थिति चीन-भारत संबंधों में विवाद का विषय बनी हुई है, जिसमें बीजिंग अक्सर उनकी वैश्विक भागीदारी और प्रभाव की आलोचना करता है।

दलाई लामा की प्रमुखता और तिब्बत के आसपास चल रहे भू-राजनीतिक

तनावों के साथ, उनकी सुरक्षा में वृद्धि आध्यात्मिक नेता की सुरक्षा के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। जेड श्रेणी की सुरक्षा के तहत उन्हें सीआरपीएफ कमांडो की एक समर्पित टीम, क्लोज-प्रोटेक्शन ऑफिसर और देश के भीतर उनकी यात्रा के दौरान एक एस्कॉर्ट प्रदान किया जाएगा।

यह निर्णय उनकी सुरक्षा को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच, खासकर चीन द्वारा उनकी गतिविधियों का लंबे समय से विरोध किए जाने के बाद आया है। यह कदम न केवल हाई-प्रोफ़ाइल हस्तियों की सुरक्षा में भारत सरकार के सक्रिय रुख को दर्शाता है, बल्कि तिब्बती नेता के प्रति उसके अटूट समर्थन का भी संकेत देता है, जिन्होंने छह दशकों से अधिक समय से हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला को अपना घर बना रखा है।

◆ 7.क्याब्जे योंगज़िन लिंग रिनपोछे ने दिल्ली सम्येलिंग में अमितायस को दीर्घायु अभिषेक प्रदान किय

२६ फरवरी, २०२५

दिल्ली। दिल्ली सम्येलिंग तिब्बती बस्ती और विभिन्न सामुदायिक संगठनों के अनुरोध पर क्याब्जे योंगज़िन लिंग रिनपोछे ने २३ फरवरी २०२५ को बुद्ध अमितायस को दीर्घायु अभिषेक प्रदान किया।

कार्यक्रम स्थल पर रिनपोछे के आगमन पर उनका स्वागत नई दिल्ली स्थित परम पावन दलाई लामा के ब्यूरो के प्रतिनिधि जिग्मे जुंगने ने किया। साथ ही विभिन्न स्थानीय तिब्बती संगठनों और तिब्बती छात्रों के प्रतिनिधियों ने भी उनका स्वागत किया। रिनपोछे के शिक्षण मंडप में प्रवेश करने और प्रारंभिक अभिषेक अनुष्ठान पूरा करने के बाद प्रतिनिधि ने बुद्ध के शरीर, वाणी और मन का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन रत्नों के साथ एक मंडल भेंट की।

मुख्य अभिषेक समारोह के दौरान रिनपोछे ने जनता को नैतिक आचरण पर सलाह दी। उन्होंने हाल ही में तिब्बत के कुछ क्षेत्रों में आए भीषण भूकंप में जान गंवाने वाले लोगों के लिए प्रार्थना और मणि मंत्र का पाठ भी करवाया। साथ ही परम पावन दलाई लामा के दिवंगत बड़े भाई, पूर्व कलोन त्रिपा ग्यालो थोंडुप और अन्य सभी मृत जीवों के लिए भी प्रार्थना की और उनके शीघ्र पुनर्जन्म तथा परम ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की।

◆ 8.१६वें कशाग के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बतियों को तिब्बती नववर्ष 'लोसर' २१५२ की शुभकामनाएं दीं

२७ फरवरी, २०२५

धर्मशाला। पारंपरिक तिब्बती नववर्ष- लोसर २१५२- वुड स्नेक वर्ष के अवसर पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दुनिया भर के तिब्बतियों को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की ओर से लोसर की शुभकामनाएं दीं।

लोसर के अवसर पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का संदेश:'आज तिब्बती वर्ष २१५२ का पहला दिन है। इस वर्ष को हमलोग वुड स्नेक वर्ष के रूप में मनाने जा रहे हैं। इस नववर्ष पर मैं परम पावन दलाई लामा और सभी वरिष्ठ बौद्ध आचार्यों और आध्यात्मिक गुरुओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करता हूं। मैं तिब्बत के अंदर और बाहर रह रहे सभी तिब्बतियों को लोसर की बधाइयां और शुभकामनाएं देता हूं।

पिछले वर्ष के दौरान हमारी दुनिया ने कई मानवजन्य और प्राकृतिक आपदाओं को देखा है। विशेष रूप से हमने तिब्बत में आए भूकंप को देखा, जिसने अनेक तिब्बतियों की जान ले ली और संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचाया। शुरुआत में चीनी सरकार ने सीमित जानकारी जारी की, लेकिन बाद में पूरी तरह से चुप्पी साध ली गई। आज तक, हमें भूकंप राहत प्रयासों के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इसलिए, इस साल लोसर व्यापक उत्सव मनाने का अवसर नहीं है। हालांकि, हम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करना जारी रखेंगे।

पिछले एक साल में अपने तिब्बती आंदोलन को लेकर हमने दुनिया भर में थोड़ी जागरुकता और समर्थन देखा है। जैसा कि मैं अक्सर कहता हूं, परिस्थिति चाहे जो भी हो हमें वैश्विक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए और समझना चाहिए कि वैश्विक घटनाक्रम तिब्बत के मुद्दे को कैसे प्रभावित करते हैं। हमें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और कौन से अवसर सामने आते हैं। परम पावन दलाई लामा के आशीर्वाद और हमारे धर्म रक्षकों की सुरक्षा के साथ-साथ हमारे ईमानदार और पारदर्शी प्रयासों से हम सामूहिक पहलों के ज़रिए परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। जैसा हम सबको ज्ञात है कि पिछले साल हमें एक छोटी राजनीतिक सफलता मिली थी, जब अमेरिकी कांग्रेस के दोनों सदनों ने कानून पारित किया था जिस पर १२ जुलाई को राष्ट्रपति ने हस्ताक्षर किए थे।

अभी भी बहुत काम बाकी है। परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन और दृष्टि का पालन करते हुए अगर हम सब मिलकर काम करें तो हम निश्चित रूप से अपने निर्धारित मार्ग पर पहुंचेंगे और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करेंगे। तिब्बत के अंदर तिब्बतियों को भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हम बाहर से यथासंभव स्थिति की निगरानी करना जारी रखते हैं। २१वीं सदी में भी तिब्बती परिवार के सदस्यों और दोस्तों के लिए बिना किसी डर के खुलकर बात करना और एक-दूसरे पर भरोसा करना मुश्किल हो गया है। हम जानते हैं कि हमारी पहचान, भाषा, धर्म और जीवन शैली नष्ट हो रही है और पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंच रहा है।

हममें से जो लोग निर्वासन में हैं, वे अंतरराष्ट्रीय जागरुकता बढ़ाने और चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए काम कर रहे हैं। जैसा कि मैं अक्सर कहता हूं स्थिति की वास्तविकता के आधार पर चीन-तिब्बत संघर्ष को अहिंसक तरीके से हल करने के लिए हमें चीनी सरकार के साथ बातचीत करनी चाहिए। क्योंकि कोई दूसरा रास्ता नहीं है। जब तक ऐसा समय नहीं आता, हमें अंतरराष्ट्रीय समुदाय से संपर्क करना चाहिए और समर्थन मांगना

चाहिए। हमें इस सीमा का भी ध्यान रखना होगा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय अपने हितों को नज़रअंदाज़ करके तिब्बत के हितों पर ध्यान देगा। हमें वैश्विक राजनीतिक परिवर्तनों की वास्तविकता पर विचार करना चाहिए। यह अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन का समय है। इन बदलती परिस्थितियों में हमें पहचान करनी चाहिए कि कौन से अवसर और चुनौतियां आ सकती हैं। अगर हम सही समय पर अवसरों को भुना सकें और चुनौतियों को पहचान सकें और उन्हें अभी हल कर सकें तो हमें उम्मीद है कि ऐसी परिस्थितियां आने पर यह आसान होगा। इसके लिए मानवीय और वित्तीय दोनों तरह के संसाधनों की आवश्यकता होगी।

हम निर्वासित तिब्बतियों ने परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में कभी उम्मीद नहीं खोई। तिब्बत के अंदर तिब्बती लोग तिब्बती पहचान की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए खुद को बलिदान करना जारी रखे हुए हैं। हमें यह प्रयास जारी रखना चाहिए। भले ही हम अपनी पीढ़ी में इन चुनौतियों का समाधान न कर पाएं, जैसा कि परम पावन सलाह देते हैं, हमें 'सर्वश्रेष्ठ की आशा करनी चाहिए लेकिन सबसे बुरे के लिए तैयार रहना चाहिए'। यदि सत्य और न्याय के लिए हमारा संघर्ष तीस से पचास वर्षों तक जारी रहता है तो इसकी जिम्मेदारी नई पीढ़ी पर आती है। इसलिए, हमें नई पीढ़ी के पोषण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस समय तिब्बत के अंदर और बाहर अपनी छोटी आबादी को देखते हुए हमें अपने व्यापक लक्ष्यों के बारे में सोचना चाहिए और क्षेत्रीय, प्रांतीय या सांप्रदायिक विभाजन में फंसने से बचना चाहिए। यदि हम अधिक व्यापक रूप से सोच सकते हैं और संकीर्ण सोच और कठोर होने के बजाय लचीले बने रह सकते हैं तो यह निश्चित रूप से हमारे उद्देश्य में नई ऊर्जा, हमारे काम में नया आत्मविश्वास लाएगा और हमारे उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा। एक बार फिर १६वें कशाग और व्यक्तिगत रूप से अपनी ओर से मैं सभी को तिब्बती नववर्ष की शुभकामनाएं देता हूं। धन्यवाद।'

◆ 9.कलोन डोल्मा ग्यारी ने पांचवें हिमालय हिंद महासागर राष्ट्र समूह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र में भाग लिया

०५ फरवरी, २०२५

नई दिल्ली। भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच बढ़ते सहयोग पर केंद्रित पांचवें हिमालय हिंद महासागर राष्ट्र समूह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन समारोह ३१ जनवरी २०२५ को दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय सुरक्षा जागरुकता मंच (एफएएनएस) और हंसराज कॉलेज द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।

सुरक्षा विभाग की कलोन (मंत्री) डोल्मा ग्यारी ने विशेष अतिथि के रूप में सत्र में उपस्थित हुईं। सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य और एफएएनएस के मुख्य संरक्षक डॉ. इंद्रेश कुमार सहित कई प्रतिष्ठित हस्तियों ने मुख्य भाषण दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केंद्र सरकार में पूर्व राज्यमंत्री डॉ. राजकुमार रंजन सिंह और विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्म भूषण से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार राम बहादुर राय उपस्थित थे।

सम्मेलन में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों और भारत तथा दक्षिण एशियाई क्षेत्र के बीच कूटनीतिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में शांति और समृद्धि के लिए क्षेत्रीय सहयोग के महत्व पर जोर दिया गया।

◆ 10.कलोन डोल्मा ग्यारी ने प्रयागराज में ऐतिहासिक 'बुद्ध विशेष संगम महाकुंभ' और 'बोध महाकुंभ यात्रा' में भाग लिया

८७ फरवरी, २०२५

प्रयागराज, ०४ फरवरी २०२५। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की माननीया कलोन (मंत्री) डोल्मा ग्यारी, सीटीए के धर्म और संस्कृति विभाग के अवर सचिव शेरिंग तोपग्याल और सुरक्षा विभाग से चिमे ताशी ने इस सप्ताह प्रयागराज में 'बुद्ध विशेष संगम महाकुंभ' और 'बोध महाकुंभ यात्रा' में भाग लिया।

आयोजन के पहले दिन सुरक्षा कलोन ने 'बोध महाकुंभ यात्रा' कार्यक्रम को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह एक आध्यात्मिक समागम था जिसमें सैकड़ों तीर्थयात्री और भक्त सम्मिलित रूप से बौद्ध मूल्यों का जश्न मनाने के लिए एक साथ आए थे। शाम को कलोन ने केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी के प्रतिभागियों और सिक्किम के भिक्षुओं के साथ बातचीत की।

दूसरे दिन ०५ फरवरी २०२५ को माननीया कलोन ने हिमालयन बौद्ध सांस्कृतिक संघ द्वारा आयोजित एक अनूठे कार्यक्रम "बुद्ध विशेष संगम महाकुंभ" में भाग लिया। कार्यक्रम में तिब्बती सांस्कृतिक परंपरा के महत्वपूर्ण अंग लखर का उत्सव मनाया गया, जिसके साथ संगसोल प्रार्थना और सांस्कृतिक प्रदर्शन (ताशी शोपा) भी हुए, जिसमें तिब्बती बौद्ध धर्म की समृद्ध परंपराओं पर प्रकाश डाला गया।

यह आध्यात्मिक समागम तिब्बती बौद्ध धर्म और भारतीय धार्मिक रिवाजों के बीच बढ़ते सांस्कृतिक आदान-प्रदान को रेखांकित करता है। यह संवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है और विभिन्न समुदायों के बीच संबंधों को मजबूत करता है।

माननीया कालोन ने भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) बुक स्टॉल का भी निरीक्षण किया और स्वयंसेवकों और आगंतुकों से बातचीत की।

दोपहर का कार्यक्रम 'बोध महाकुंभ यात्रा' और 'बुद्ध विशेष संगम महाकुंभ' की समिति द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित शोभा यात्रा के रूप में हुआ। बौद्ध भिक्षुओं ने 'बुद्धं शरणम् गच्छामि', 'धम्मम् शरणम् गच्छामि', 'संघम् शरणम्

गच्छामि' का नारा लगाते हुए भव्य जुलूस निकाला, जिसका उद्देश्य जन-जन तक बौद्ध धर्म के सार को पहुंचाना था। जुलूस का समापन जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि के प्रभु प्रेमी शिविर में हुआ, जहां भिक्षुओं का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

माननीया कालोन डोल्मा ग्यारी ने इस आयोजन को ऐतिहासिक बताया और कहा कि यह सनातन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच निकटता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने भिक्षुओं और लामाओं को साथ-साथ चलते हुए देखकर अपनी खुशी व्यक्त की और कहा कि बौद्ध और सनातन हमेशा एकजुट रहे हैं और आगे भी एक साथ आगे बढ़ते रहेंगे।

प्रयागराज में महाकुंभ को दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसमें दुनिया भर से लाखों श्रद्धालु और तीर्थयात्री आते हैं। यह पवित्र आयोजन हर १२ साल के बाद होता है। यह आयोजन विभिन्न धर्मों के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा है। यह असाधारण अवसर गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के त्रिवेणी संगम पर आध्यात्मिक नवीकरण और चिंतन का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

◆ 11.स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने इंग्लैंड के ऑल पार्टी पार्लियामेंटरी ग्रप ऑन तिब्बत के औपचारिक गठन को लेकर आभार व्यक्त किया

१० फरवरी, २०२५

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने स्कॉटिश नेशनल पार्टी के सांसद और ऑल पार्टी पार्लियामेंटरी ग्रप ऑन तिब्बत के अध्यक्ष क्रिस लॉ को लिखे पत्र में तिब्बत पर यू.के. के ऑल पार्टी पार्लियामेंटरी ग्रप ऑन तिब्बत के औपचारिक गठन पर हार्दिक आभार व्यक्त किया।

पत्र में स्पीकर तेनफेल ने लिखा, 'तिब्बती लोगों और १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से मैं तिब्बत पर यू.के. ऑल पार्टी पार्लियामेंटरी ग्रुप ऑन तिब्बत के औपचारिक गठन के लिए आपका और समूह के सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूं। यह पहल यू.के. संसद के भीतर शांति, मानवाधिकारों और तिब्बत की अनूठी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की वकालत करते हुए एक मजबूत और प्रभावशाली आवाज़ के रूप में काम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।'

उन्होंने लिखा, 'मैं ऑल पार्टी पार्लियामेंटरी ग्रप ऑन तिब्बत के सभी प्रतिष्ठित सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक बधाई और गहरी प्रशंसा व्यक्त करता हूं। आपका समर्थन अत्यंत मूल्यवान है, यह तिब्बती लोगों को आशा का गहरा संदेश देता है। हम सब मिलकर इस दुनिया को सभी के लिए गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए बेहतर जगह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।'

◆ 12.निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल ने लोसर पर तिब्बतियों को बधाई दी

२७ फरवरी, २०२५

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल ने पारंपरिक तिब्बती नववर्ष लोसर २१५२ के अवसर पर तिब्बत के अंदर और बाहर रहने वाले तिब्बतियों को लोसर की शुभकामनाएं दीं। तिब्बतियों के बीच यह वर्ष वुड स्नेक वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

लोसर के लिए अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल का संदेश :

वुड स्नेक वर्ष के तौर पर मनाए जा रहे तिब्बती नववर्ष २१५२ के इस शुभ अवसर पर निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से और व्यक्तिगत रूप से मैं तिब्बत के अंदर और बाहर रहने वाले सभी तिब्बतियों और तिब्बत के सभी मित्रों को लोसर की शुभकामनाएं देता हूं।

पिछले वर्ष कई सकारात्मक घटनाक्रम हुए। यह महत्वपूर्ण है कि हम इस नए वर्ष में कई और अच्छे काम करने के अवसरों का लाभ उठाएं ताकि इसे सार्थक बनाया जा सके। हमें शरणार्थी बने ६६ साल हो गए हैं। तिब्बत के अंदर रहने वाले तिब्बती लोग तिब्बती भाषा, संस्कृति और धर्म को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए समर्पण, साहस और दृढ़ संकल्प के साथ एकजुटता से काम कर रहे हैं।

निर्वासित तिब्बतियों के तौर पर हम भारत की सरकार और लोगों के साथ-साथ अमेरिका, यूरोप और शरण देने वाले अन्य मेजबान देशों की सरकारों और लोगों से उदार समर्थन और सहायता पर निर्भर हैं। ऐसे समय में हमारे लिए यह अहम है कि हमें समर्पण, दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से अपनी भाषा, संस्कृति के संरक्षण और तिब्बत के न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए अपने संघर्ष प्रयासों को न केवल जारी रखना चाहिए बल्कि और तेज करना चाहिए।

इस वर्ष ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, परम पावन दलाई लामा ९० वर्ष के हो रहे हैं। इसलिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और कई संगठन परम पावन की करुणा का जश्न मनाने और इसे यादगार बनाने की तैयारी कर रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी तिब्बती परम पावन दलाई लामा के महान दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए सद्भाव से एकजुट हों और सभी लोग बुरे कामों से दूर रहते हुए पुण्य कार्यों में संलग्न हों। बंदी जानवरों को मुक्त करें और परम पावन के लंबे जीवन के लिए यथासंभव अन्य पुण्य कार्य करें। हमारी मान्यता के अनुसार ऐसे नेक कार्यों से तिब्बती समुदाय और व्यक्तियों दोनों को बहुत लाभ होगा। एक बार फिर मैं सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएं देता हूं।

अंत में मैं परम पावन दलाई लामा और सभी आदरणीय उच्च लामाओं और बुद्ध वचनों के समर्थकों के महान प्रयासों की दीर्घायु और पूर्ति के लिए प्रार्थना करता हूं। मैं तिब्बत-चीन संघर्ष के शीघ्र समाधान के माध्यम से न्याय और

तिब्बतियों के पुनर्मिलन के हमारे प्रयास की सफलता के लिए भी प्रार्थना करता हूं। धन्यवाद। ताशी देलेक।

◆ 13.सांसद कर्मा गेलेक और लोबसंग थुप्टेन पोंटसांग का चेन्नई दौरा संपन्न

०३ फरवरी, २०२५

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के आधिकारिक कार्यक्रम के अनुसार, सांसद कर्मा गेलेक और लोबसंग थुप्टेन पोंटसांग को लेकर गठित संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने ३० जनवरी से ०१ फरवरी २०२५ तक चेन्नई का अपना दौरा सफलतापूर्वक पूरा किया।

अपनी यात्रा के दौरान, सांसदों ने स्थानीय तिब्बती समुदाय के साथ-साथ चेन्नई में ताइपे आर्थिक और सांस्कृतिक कार्यालय के महानिदेशक और निदेशक, मद्रास उच्च न्यायालय के एक अधिवक्ता, तमिलनाडु में भाजपा के राज्य उपाध्यक्ष और तमिलनाडु कांग्रेस पार्टी के राज्य अध्यक्ष और उपाध्यक्ष सहित प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की।

अपनी आधिकारिक यात्रा के दौरान दोनों तिब्बती सांसद ३० जनवरी को दोपहर ३:३० बजे चेन्नई हवाई अड्डे पर पहुंचे। उनका स्वागत दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय के कर्मचारी तेनज़िन सेपाल ने किया।

जब सांसद चेन्नई में मेन-सी-खांग (तिब्बती चिकित्सा एवं खगोल विज्ञान संस्थान) पहुंचे तो उनका स्वागत डॉ. तेनज़िन सेतेन, कर्मचारियों और छात्रों ने किया। दोनों सांसदों ने अपनी यात्रा के उद्देश्य को साझा किया, विचारों का आदान-प्रदान किया और विभिन्न सवालों के जवाब दिए।

३१ जनवरी २०२५ को वे चेन्नई में ताइपे आर्थिक और सांस्कृतिक कार्यालय पहुंचे और महानिदेशक रिचर्ड सी.एल. चेन और निदेशक डेनिस एम.एस. साई से मुलाकात की। बैठक की शुरुआत में उन्होंने सम्मान के प्रतीक के रूप में औपचारिक स्कार्फ (खटक) और परम पावन दलाई लामा की आत्मकथा 'माई लैंड एंड माई पीपल' भेंट की।

इसके बाद दोनों सांसदों ने तिब्बत के अंदर मौजूदा गंभीर स्थिति, ताइवान और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के बीच संबंधों के साथ-साथ निर्वासन में तिब्बती लोकतंत्र के विकास और संरचना पर चर्चा की। महानिदेशक ने तिब्बत के अंदर तिब्बती पहचान, भाषा और संस्कृति को खत्म करने वाली चीनी कम्युनिस्ट सरकार की नीतियों को लेकर चिंता व्यक्त की।

उन्होंने मद्रास उच्च न्यायालय के अधिवक्ता के. अरविंद से मुलाकात की। वह ऐसे व्यक्ति हैं जो नियमित रूप से तिब्बत मुद्दे में रुचि दिखाते हैं और उन्होंने पहले संसद सदस्यों की यात्राओं के दौरान स्थानीय अधिकारियों के साथ बैठकों की व्यवस्था करने में मदद की थी। उन्होंने कहा कि तिब्बत और भारत दो राष्ट्र हैं जिनका एक लंबा ऐतिहासिक संबंध है। लेकिन अब तिब्बत चीनी आधिपत्य में कठिनाइयों का सामना कर रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत सरकार को तिब्बती शरणार्थियों की अर्थव्यवस्था और शिक्षा सहित सभी पहलुओं में मदद करनी चाहिए। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे मदद के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।

०१ फरवरी २०२५ को उन्होंने भाजपा के तमिलनाडु राज्य उपाध्यक्ष श्री चक्रवर्ती से भाजपा राज्य मुख्यालय में मुलाकात की। उन्होंने उन्हें सम्मान के प्रतीक के रूप में एक औपचारिक दुपट्टा (खटक) और परम पावन दलाई लामा की आत्मकथा 'माई लैंड एंड माई पीपल' भेंट की। श्री चक्रवर्ती ने अपनी पार्टी की ओर से तिब्बत मुद्दे के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया और राज्य में तिब्बतियों को आवश्यक मदद के बारे में पूछा।

दोनों सदस्यों ने बताया कि एक ओर तिब्बती आम तौर पर भारतीय सरकार और लोगों के समर्थन के लिए बहुत आभारी हैं जबकि दूसरी ओर चीनी सरकार तिब्बत के अंदर कठोर नीतियों को लागू कर रही है। विशेष रूप से राज्य के मामलों के संबंध में उन्होंने ऊटी में तिब्बती व्यापारियों के सामने आने वाले बाजार स्थान के मुद्दों को हल करने में मदद का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी बताया कि चेन्नई स्थित मेन-सी-खांग (तिब्बती चिकित्सा संस्थान) स्थानीय मरीजों के लिए लाभदायक है, लेकिन मकान मालिक द्वारा किराया काफी बढ़ा दिए जाने के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, तथा उन्होंने इस मामले में राज्य सरकार से सहायता का अनुरोध किया।

जवाब में उन्होंने कहा कि वे मेन-सी-खांग मुद्दे पर राज्य सरकार से चर्चा करेंगे। ऊटी के बारे में उन्होंने कहा कि वे मुख्य अभियंता को सीधे निर्देश देंगे कि वे कठिनाइयों को देखें और हल करें।

इसके बाद वे तमिलनाडु कांग्रेस कार्यालय गए और तमिलनाडु कांग्रेस पार्टी के राज्य अध्यक्ष श्री के. सेल्वापेरुन्थगई और तमिलनाडु कांग्रेस पार्टी के राज्य उपाध्यक्ष श्री स्वर्ण सेथुरमन से मिले। उन्होंने उन्हें औपचारिक स्कार्फ और उपहार भेंट किए।

दोनों सदस्यों ने तिब्बतियों के प्रति भारत सरकार और लोगों की ओर से समग्र समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया, विशेष रूप से दिवंगत प्रधानमंत्री नेहरू की सहायता का उल्लेख करते हुए जब तिब्बती शरणार्थी पहली बार भारत आए थे। उन्होंने ऊटी में तिब्बती विक्रेताओं के सामने आने वाले बाजार के स्थान के मुद्दों और मेन-सी-खांग भवन की स्थिति के बारे में मदद का अनुरोध किया। जवाब में, उन्हें इन चिंताओं को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहा गया और उन्हें सूचित किया गया कि अगले सोमवार को राज्य के स्वास्थ्य मंत्री के साथ एक बैठक होगी जहाँ इन मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मेन-सी-खांग का दौरा करने का भी वादा किया। मेन-सी-खांग को इस बारे में सूचित कर दिया गया है।

कांग्रेस राज्य अध्यक्ष तिब्बत मुद्दे के बारे में अच्छी तरह से अवगत थे और उन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए अपना निरंतर समर्थन व्यक्त किया। बैठक लगभग १ घंटे ३० मिनट तक चली।

◆ 14.भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने महाकुंभ में नागरिक समाज से संपर्क अभियान चलाया

०८ फरवरी, २०२५

प्रयागराज। भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने महाकुंभ में अपने नागरिक समाज संपर्क कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इससे तिब्बती मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक सार्थक मंच तैयार हुआ। तीन दिवसीय कार्यक्रम में विविध पृष्ठभूमि और राष्ट्रीयताओं से नागरिक समाज के सदस्यों, छात्रों और आम जनता की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई।

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण वरिष्ठ नेता श्री भैयाजी जोशी की उपस्थिति थी। उन्होंने अपने समर्थन और प्रोत्साहन से इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार और न्यू आर. एस.जे. पब्लिक स्कूल, झूसी, इलाहाबाद के छात्रों ने तिब्बती मुद्दे और संस्कृति के बारे में जानने में गहरी रुचि दिखाई। कार्यक्रम के माध्यम से तेलंगाना, लखनऊ, बिहार, गुजरात, अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख और प्रयागराज के प्रतिभागियों के साथ-साथ डेनमार्क और स्वीडन के आगंतुकों सहित पूरे भारत के लोगों से जुड़ने का एक उत्कृष्ट अवसर भी मिला।

आईटीसीओ के कर्मचारियों ने शाम को अपनी संपर्क गतिविधियों को बढ़ाया। समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से बातचीत की और तिब्बत की स्थिति के बारे में जागरुकता फैलाई। महाकुंभ में सिविल सोसाइटी से संपर्क कार्यक्रम आईटीसीओ की तिब्बत जागरुकता पहल में एक और मील का पत्थर था। इस कार्यक्रम में भारतीय नागरिक समाज, विशेष रूप से युवाओं की बढ़ती संख्या ने हिस्सा लिया, जिन्होंने तिब्बती संस्कृति और इतिहास में गहरी रुचि दिखाई। यह बढ़ता समर्थन तिब्बती मुद्दे के समर्थन में भारतीय समुदायों के साथ मजबूत संबंध बनाने के आईटीसीओ के प्रयासों की सफलता की पुष्टि करता है।

◆ 15.तिब्बती और उनके जापानी समर्थकों ने तिब्बती स्वतंत्रता दिवस की पुनः पुष्टि की ११२वीं वर्षगांठ मनाया

१२ फरवरी, २०२५

टोक्यो। तिब्बती और उनके जापानी समर्थक १९१३ में १३वें दलाई लामा द्वारा तिब्बती स्वतंत्रता दिवस की पुनः पुष्टि की ११२वीं वर्षगांठ मनाने के लिए ११ फरवरी २०२५ को टोक्यो के शिंजुकु ऐतिहासिक संग्रहालय हॉल में एकत्र हुए। स्टूडेंट्स फॉर फ्री तिब्बत (एसएफटी) और तिब्बती समुदाय जापान (टीसीजे) ने इस ऐतिहासिक दिन के महत्व के बारे में जनता को जागरूक करने और इस चीनी दावे को झूठा बताने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया कि तिब्बत प्राचीन काल से चीन का हिस्सा रहा है।

एसएफटी के अध्यक्ष शेरिंग दोरजी और टीसीजे के अध्यक्ष दोरजी शिओटा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें कार्यक्रम के महत्व के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर तिब्बती और जापानी राष्ट्रगान गाए गए और तिब्बत में आए भूकंप के पीड़ितों और हाल ही में ९७ वर्ष की आयु में दिवंगत हुए कसूर ग्यालो थोंडुप के लिए एक मिनट का मौन रखा गया।

आयोजकों ने इस कार्यक्रम में दो अतिथि वक्ताओं के रूप में वासेदा विश्वविद्यालय की प्रोफेसर इशिहामा युमिको और जापान और पूर्वी एशिया के लिए दलाई लामा के संपर्क कार्यालय के डॉ. सावांग ग्यालपो आर्य को आमंत्रित किया था।

प्रोफेसर इशिहामा युमिको ने तिब्बती इतिहास, दलाई लामाओं और २०वीं सदी की शुरुआत में तिब्बत में आए जापानी आगंतुकों पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने ब्रिटिश भारत, रूस और चीन द्वारा खेले गए महान खेलों पर भी चर्चा की। उन्होंने टिप्पणी की कि यह वार्ता कार्यक्रम जापानी राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर हो रहा है। इसी दिन को ६६० ईसा पूर्व में पहले जापानी सम्राट जिम्मू सिंहासन पर आरूढ़ हुए थे।

प्रतिनिधि डॉ. सावांग ग्यालपो आर्य ने बताया कि कैसे तिब्बत प्राचीन काल से एक स्वतंत्र राष्ट्र रहा है और कैसे सीसीपी तिब्बत पर अपना दावा जताने के लिए मनगढ़ंत इतिहास को प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने बताया कि युआन और किंग दोनों राजवंश विदेशी राजवंश थे जिन्होंने चीन पर विजय प्राप्त की और इन दोनों राजवंशों से तिब्बत को विरासत में प्राप्त करने का सीसीपी का दावा निराधार और ऐतिहासिक रूप से गलत है। उन्होंने श्रोताओं को चीनी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों के बारे में जानकारी दी और बताया कि कैसे सीसीपी तिब्बती बच्चों को उनकी मातृभाषा, पहचान और संस्कृति से वंचित करने की कोशिश कर रही है।

इस वार्ता कार्यक्रम में तिब्बती और जापानी समर्थक, बुद्धिजीवी और आम जनता शामिल हुई। एसएफटी के फुजिता योको ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के दौरान तिब्बत और चीनी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों पर सूचना पुस्तिकाएं वितरित की गईं।

◆ 16.लोसर के पहले दिन सीटीए नेतृत्व और कर्मचारियों ने सुगलागखांग में सेतोर चढ़ाया

२८ फरवरी, २०२५

धर्मशाला। तिब्बती नव वर्ष लोसर यानि वुडेन स्नैक वर्ष के अवसर पर वर्ष के पहले दिन २८ फरवरी २०२५ की सुबह-सुबह केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) नेतृत्व और उसके कर्मचारी धर्मशाला में थेकचेन चोलिंग सुगलागखांग की छत पर एकत्रित हुए और धर्म रक्षक देवी पलदेन ल्हामो को परंपरागत रूप से बलि का केक चढ़ाने की रस्म में हिस्सा लिया।

यह रस्मी समारोह दूसरे दलाई लामा के समय से सभी दलाई लामाओं द्वारा पाल्डेन ल्हामो को प्रसन्न करने के लिए ५०० से अधिक वर्षों से लगातार आयोजित किया जाता रहा है। आज २८ फरवरी का यह समारोह नामग्याल मठ के भिक्षुओं के नेतृत्व में आह्वान प्रार्थनाओं के पाठ के साथ शुरू हुआ। इसके बाद यह अनुष्ठान सुगलागखांग के मुख्य प्रार्थना कक्ष में जारी रहा, जहां कार्यवाहक सिक्योंग थारलाम डोल्मा चांगरा ने परम पावन दलाई लामा के चित्र के समक्ष एक मंडल अर्पित किया।

ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, ऐसा कहा जाता है कि दूसरे दलाई लामा गेदुन ग्यात्सो ने ल्हामो लात्सो झील के पवित्र स्थल का अनावरण करने और वहां एक जटिल सेटोर अनुष्ठान अर्पित करने के बाद सेटोर अर्पित करने की प्रथा शुरू की थी। इस महत्वपूर्ण कार्य ने न केवल दलाई लामाओं और पाल्डेन ल्हामो के बीच एक अनूठे संबंध की शुरुआत की, बल्कि एक स्थायी परंपरा भी स्थापित की। तब से दलाई लामाओं के निजी मठ नामग्याल मठ के भिक्षुओं ने पाल्डेन ल्हामो भक्तों के साथ मिलकर लगातार मासिक प्रसाद और तिब्बती नववर्ष के पहले दिन की सुबह विशेष सेटोर अनुष्ठान किया है।

◆ 17.तिब्बती युवा पक्षधरता प्रशिक्षण के दौरान ब्लू माउंटेंस सिटी काउंसिल द्वारा तिब्बती ध्वज फहराया गया

१७ फरवरी, २०२५

कैनबरा। तिब्बत सूचना कार्यालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय ऑस्ट्रेलियाई तिब्बती युवा नेतृत्व और पक्षधरता प्रशिक्षण, १३ फरवरी २०२५ को ब्लू माउंटेंस के कटूम्बा में करुणा रिट्रीट सेंटर में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

तिब्बती मानवाधिकार, जमीनी स्तर पर पक्षधरता और व्यापक तिब्बती आंदोलन जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित कार्यशाला का नेतृत्व केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता तेनज़िन लेक्षय, तिब्बती मानवाधिकार और लोकतंत्र केंद्र के पूर्व कार्यकारी निदेशक शेरिंग सोमो, पूर्व तिब्बती संसद सदस्य क्यिज़ोम धोंगडु और ऑस्ट्रेलिया तिब्बत परिषद के कार्यकारी निदेशक डॉ. ज़ो बेडफ़ोर्ड सहित प्रतिष्ठित प्रशिक्षकों द्वारा किया गया। प्रशिक्षण ने प्रतिभागियों को मानवाधिकार मुद्दों और पक्षधरात रणनीतियों पर अद्यतन अंतर्दृष्टि से अवगत कराया। इससे उन्हें स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर तिब्बती मुद्दों को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाया गया। चीनी संपर्क अधिकारी दावा सांग्मो ने प्रतिभागियों को सीटीए के चीनी संपर्क कार्यक्रम से भी परिचित कराया।

कार्यक्रम के साथ ब्लू माउंटेंस तिब्बती समुदाय ने ब्लू माउंटेंस सिटी काउंसिल के सहयोग से ब्लू माउंटेंस के बीचों-बीच तीन तिब्बती झंडे फहराए। झंडे तीन दिनों तक गर्व से फहराते रहे, जो तिब्बती मुद्दे के लिए स्थानीय समर्थन का प्रतीक थे।

कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिभागियों को २०२५ और २०२६ के लिए कार्य योजनाओं पर चर्चा करने और उन्हें अपनाने के लिए क्षेत्रीय समूहों में विभाजित किया गया। ये योजनाएं तिब्बती मुद्दे में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने और अपने क्षेत्रों में उनके वकालत के प्रयासों को बढ़ाने के लिए बनाई गई हैं, जिसमें अंतर्देशीय तिब्बती मुद्दों के बारे में जागरुकता बढ़ाने पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया गया है। कार्यशाला का समापन नए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समन्वयकों के चुनाव के साथ हुआ। पूरे ऑस्ट्रेलिया से कुल ३० प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया।

◆ 18.चीनी संपर्क अधिकारी सांगेय क्याब ने चीन के अंदर धार्मिक उत्पीड़न के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन में भाग लिया

२४ फरवरी, २०२५

जिनेवा। यूरोपीय देशों के लिए चीनी संपर्क अधिकारी सांगेय क्याब ने स्विट्जरलैंड के बेसल में २२ फरवरी २०२५ को चीनी ईसाई समूहों द्वारा आयोजित विरोध-प्रदर्शन में भाग लिया।

'एसोसिएशन फॉर द डिफेंस ऑफ ह्यूमन राइट्स एंड रिलिजियस फ्रीडम (मानवाधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता रक्षा संघ)' द्वारा 'द चर्च ऑफ अलमाइटी गॉड' के सहयोग से आयोजित यह विरोध-प्रदर्शन स्विट्जरलैंड के बेसल ट्रेन स्टेशन पर आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम २२ फरवरी को स्विट्जरलैंड, जर्मनी और ऑस्ट्रिया में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया। इसमें धार्मिक उत्पीड़न के कारण चीन से भागे हुए व्यक्तियों ने भाग लिया था। इस सभा का उद्देश्य अप्रैल २०२४ में जिलिन

प्रांत में ६४८ विश्वासियों की गिरफ्तारी और दो व्यक्तियों की कथित यातना और हत्या की निंदा करना था।

प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए सांगेय क्याब ने चीन में उत्पीड़न के पीड़ितों के साथ एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने कहा, 'मैं आज यहां आया हूं, क्योंकि हम सभी ने चीनी सरकार के उत्पीड़न और पीड़ा का अनुभव किया है। मैं आपका समर्थन जताने आया हूं। आपने जिस यातना और पीड़ा का उल्लेख किया है, वह तिब्बत में हर दिन होती है। तिब्बत में ऐसा उत्पीड़न ७० वर्षों से जारी है। दस लाख तिब्बती बच्चों को जबरन बोर्डिंग स्कूलों में भेजा गया है और उन्हें तिब्बती भाषा सीखने की अनुमति नहीं है। चीनी सरकार तिब्बत में व्यापक स्तर पर हर चीज का चीनीकरण करने की नीति लागू कर रही है, जो शी जिनपिंग के शासन में और भी बदतर हो गई है। तिब्बतियों ने ६६ वर्षों से चीनी सरकार का विरोध किया है और ऐसा करना जारी रखा है। हममें से जो लोग विदेश में हैं, उन्हें तिब्बत और चीन में पीड़ित लोगों की आवाज़ बनना चाहिए। हमें चीनी सरकार के कुकर्मों को उजागर करना चाहिए।' प्रदर्शनकारियों द्वारा गाए गए एक गीत का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, 'जैसा कि आपके गीत में कहा गया है कि शैतान के बुरे कामों को सूरज के सामने उजागर किया जाना चाहिए।' इसी तरह से हमें दुनिया को चीनी सरकार के गलत कामों से अवगत कराने की आवश्यकता है।'

अपने भाषण का समापन करते हुए सांगेय क्याब ने प्रदर्शनकारियों को अपने संघर्ष में दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा, 'हम तिब्बती ६६ वर्षों से निर्वासन में हैं। हम संघर्ष करना जारी रखे हुए हैं। आप केवल कुछ वर्षों से निर्वासन में हैं। हिम्मत मत हारिए। कृपया मज़बूत बने रहिए। अगर हम एक साथ अभियान चलाते हैं तो हमारे पास बहुत ताकत होगी। मुझे उम्मीद है कि हम भविष्य में और अधिक सहयोग कर सकते हैं।'

सुबह १० बजे से दोपहर ३ बजे तक चले इस विरोध-प्रदर्शन में ३० से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रदर्शनकारियों ने चीनी सरकार की कड़ी आलोचना की और 'हमें आज़ादी चाहिए' और 'धार्मिक विश्वास के लिए कोई सज़ा नहीं' जैसे नारे लगाए।

◆ 19.तिब्बत संग्रहालय में परम पावन दलाई लामा की जीवन गाथा पर अमेरिकी प्रदर्शनी दौरा संपन्न

२४ फरवरी, २०२५

सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) के तिब्बत संग्रहालय द्वारा अमेरिका के चार राज्यों में आयोजित परम पावन दलाई लामा की जीवन गाथा और उपलब्धियों पर यात्रा प्रदर्शनी सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

यह प्रदर्शनी ०३ फरवरी को न्यूयॉर्क में शुरू हुई और मिनेसोटा, विस्कॉन्सिन और शिकागो में तिब्बती सामुदायिक केंद्रों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और कला संस्थानों सहित १२ स्थानों पर आयोजित की गई। इसमें परम पावन दलाई लामा की जीवन गाथा और स्थानीय तिब्बतियों और विदेशियों के प्रति उनकी चार महान प्रतिबद्धताओं को प्रदर्शित किया गया।

प्रदर्शनी का अंतिम चरण शिकागो तिब्बती सामुदायिक केंद्र में आयोजित किया गया और इसका उद्घाटन नॉर्थ-वेस्टर्न यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान विभाग के प्रोफेसर केन पैलर ने किया। तीसरे दिन, स्कोकी के मेयर जॉर्ज वैन ड्यूसन अतिथि के रूप में शामिल हुए।

तिब्बती कैलेंडर के अनुसार, परम पावन दलाई लामा के ९०वें वर्ष की शुरुआत के अवसर पर सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) ने अमेरिका में चार तिब्बती सामुदायिक संघों के सहयोग से ०३ से २४ फरवरी २०२५ तक यात्रा प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह आयोजन पूर्वी अमेरिका, न्यूयॉर्क और मिडवेस्ट, मिनेसोटा, विस्कॉन्सिन और शिकागो में महत्वपूर्ण तिब्बती आबादी वाले क्षेत्रों में किया गया।

◆ 20.तिब्बत की पूर्व राजनीतिक कैदी नामक्यी ने जिनेवा में १७वें मानवाधिकार और लोकतंत्र शिखर सम्मेलन में भाषण दिया

१९ फरवरी, २०२५

जिनेवा। मानवाधिकार और लोकतंत्र के लिए १७वां जिनेवा शिखर सम्मेलन-२०२५ आधिकारिक तौर पर कल १८ फरवरी २०२५ को सेंटर इंटरनेशनल डे कॉन्फ्रेंस जिनेवा (सीआईसीजी) में शुरू हुआ। वैश्विक मानवाधिकार उल्लंघनों को उजागर करने और उससे निपटने के लिए समर्पित इस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मंच की शुरुआत यूनाइटेड नेशंस वॉच के कार्यकारी निदेशक हिलेल नेउर के स्वागत भाषण से हुई। उद्घाटन भाषण विश्व स्वतंत्रता कांग्रेस के उपाध्यक्ष, लोकतंत्र समर्थक नेता, लेखक और पूर्व विश्व शतरंज चैंपियन गैरी कास्पारोव ने दिया।

इस वर्ष के शिखर सम्मेलन में रूस, सऊदी अरब, चीन, बेलारूस, हांगकांग, उग्यूर क्षेत्र, वियतनाम और ईरान में मानवाधिकारों के हनन पर प्रकाश डालने वाले वक्ताओं की एक प्रतिष्ठित टोली शामिल है। वक्ताओं में तिब्बती कार्यकर्ता और पूर्व राजनीतिक कैदी नामक्यी ने चीनी अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न के अपने कष्टदायक अनुभव साझा किए।

उनके भाषण देने से पहले उनके २०१५ के विरोध का एक छोटा वीडियो क्लिप दिखाया गया, जो उनकी सक्रियता और उनके द्वारा सामना किए गए गंभीर परिणामों का एक हृदयविदारक दृश्य विवरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा, 'मैंने व्यक्तिगत रूप से देखा कि कैसे चीनी सैन्य बल मेरे क्षेत्र में और कीर्ति मठ में तिब्बतियों पर नकेल कस रहे थे। मेरा दिल दुख और पीड़ा से भर गया, जिसने मुझे अपनी आवाज उठाने के लिए मजबूर किया।'

२१ अक्तूबर २०१५ को नामक्यी और उनके चचेरी बहन तेनज़िन डोल्मा ने न्गाबा काउंटी के शहीद चौक पर एक विरोध-प्रदर्शन में हिस्सा लिया था। इसमें परम पावन दलाई लामा की बड़ी तस्वीरें थीं और उनके तिब्बत लौटने और अपने वतन की आजादी का आह्वान किया गया था। उन्होंने हमारे हाथों से तस्वीरें जबरदस्ती छीन लीं, हमारी आवाज़ दबा दी, हमें ज़मीन पर पटक दिया और आखिरकार हमें हथकड़ी लगा दी।'

आधी रात को बरखम हिरासत केंद्र में स्थानांतरित किए जाने से पहले दोनों को न्गाबा काउंटी हिरासत केंद्र में रखा गया था। नामक्यी ने हिरासत में अपने साथ हुई अत्यधिक यातनाओं का विवरण दिया। इन यातनाओं में शामिल हैं-

- ठीक से सोने न देना और १५०-१६० डिग्री तक की अत्यधिक गर्मी में रखा जाना।

- शारीरिक शोषण, जिसमें पुरुष अधिकारियों द्वारा थप्पड़ मारना, लात मारना और पीटना शामिल है।

- मनोवैज्ञानिक दबाव, जिसमें पूछताछकर्ता झूठी गवाही देने के बदले में सजा कम कराने की पेशकश करके कबूलनामा निकालने का प्रयास करते हैं।

एक साल से अधिक समय तक हिरासत में रहने के बाद २३ नवंबर २०१६ को नामक्यी और उनकी चचेरी बहन पर ट्रोचू काउंटी पीपुल्स कोर्ट में मुकदमा चलाया गया। अभियोजकों ने उनसे हल्की सजा के बदले में हत्या, चोरी या ड्रग डीलिंग के झूठे आरोपों को स्वीकार करने या पछतावा करने का आग्रह किया। उन्होंने इनकार कर दिया। केवल १६ वर्ष की आयु होने के बावजूद चीनी अधिकारियों ने नामक्यी की आधिकारिक आयु को १८ वर्ष कर दिया और उसे 'देश के साथ विश्वासघात' और 'अलगाववादी गतिविधियों' में शामिल होने के लिए तीन साल की जेल की सजा सुनाई।

नामक्यी ने सिचुआन प्रांत की महिला जेल में कठोर परिस्थितियों का वर्णन इन शब्दों में किया- :

- अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण और चीनी कानूनों और 'देशभक्ति शिक्षा' का अनिवार्य अध्ययन।

- नस्लीय भेदभाव, तिब्बती कैदियों को एक-दूसरे से बात करने से मना किया गया।

- गंभीर कुपोषण, उचित चिकित्सा देखभाल की कमी और अत्यधिक ठंड में रखा जाना।

- जबरन श्रम, तीव्र कृत्रिम प्रकाश में तांबे के तारों को जोड़ने का काम कराना, जिससे उनकी आँखों को दीर्घकालिक नुकसान हुआ।

उनकी चचेरी बहन तेनज़िन डोल्मा को सिगरेट के केस बनाने का काम सौंपा गया था और बाद में उसने घड़ियां बनाने का काम किया। २१ अक्तूबर २०१८ को अपनी सजा पूरी करने के बाद दोनों को न्गाबा काउंटी के पद्मा ल्हातांग डिस्पैच सेंटर में और एक सप्ताह के लिए हिरासत में रखा गया। उनके परिवारों को गारंटी-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया और उनके नाम सरकारी ब्लैक लिस्ट में जोड़ दिए गए।

नामक्यी ने निरंतर निगरानी, पुलिस पूछताछ और अपनी आवाजाही पर प्रतिबंधों का वर्णन करते हुए कहा, 'हालांकि मेरा शरीर जेल से रिहा हो गया था, लेकिन मेरा मन अभी भी कैद में था। मुझे अक्सर पुलिस स्टेशन बुलाया जाता था, मेरा फोन जब्त कर लिया जाता था और मुझे नियमित रूप से अपने ठिकाने और बातचीत की रिपोर्ट देनी होती थी। ऐसी कठिनाइयों के बीच मेरे दिमाग में एक सवाल बार-बार आता था: क्या संयुक्त राष्ट्र तिब्बत में हो रही पीड़ा के बारे में जानता है? क्या कोई है जो हमारा समर्थन करेगा?'

अपनी कहानी सार्वजनिक तौर पर सुनाने के लिए दृढ़ संकल्पित नामक्यी १३ मई २०२३ को भारत में निर्वासन में चली गईं, एक ऐसे देश में शरण लेने की तलाश में जहां वह तिब्बतियों की दुर्दशा के बारे में खुलकर बोल सकें।

उन्होंने कहा, 'मुझे यह मंच देने के लिए धन्यवाद। अगर कोई भी, कहीं भी, ऐसा मंच प्रदान करता है तो मैं वास्तविक स्थिति के बारे में सार्वजनिक तौर पर बताऊंगी।' उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को एक शक्तिशाली संदेश देते हुए अपने भाषण का समापन किया: 'यह केवल मेरी जीवन कहानी नहीं है, बल्कि हजारों तिब्बतियों की कहानी है। तिब्बत के अंदर लाखों तिब्बती आज भी ऐसी ही पीड़ा में जी रहे हैं। इसलिए, कृपया तिब्बत और तिब्बती लोगों की परम पावन दलाई लामा की तिब्बत वापसी की आकांक्षाओं का समर्थन करना जारी रखें।'

मानवाधिकार और लोकतंत्र के लिए जिनेवा शिखर सम्मेलन का उद्देश्य दुनिया भर में मानवाधिकारों की तत्काल स्थितियों पर प्रकाश डालना है। २५ से अधिक मानवाधिकार संगठनों के महासंघ द्वारा आयोजित १७वें वार्षिक शिखर सम्मेलन में रूस, क्यूबा, ईरान, हांगकांग, सऊदी अरब, तिब्बत और इरिट्रिया जैसे देशों के प्रमुख असंतुष्ट कार्यकर्ता एक साथ इकट्ठा होते हैं। इसका प्राथमिक उद्देश्य इन साहसी व्यक्तियों को अपनी गवाही सार्वजनिक करने, प्रणालीगत दुरुपयोगों के बारे में जागरुकता बढ़ाने और लोकतांत्रिक सुधारों की वकालत करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। उनकी आवाज़ को बुलंद करके, शिखर सम्मेलन वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों के उल्लंघन को उजागर करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन और कार्रवाई को संगठित करना चाहता है।

◆ 21.तिब्बतियों और उग्यूरों के खिलाफ चीन दुनिया भर में दमन चक्र चला रहा : स्विट्जरलैंड

१४ फरवरी, २०२५

जिनेवा। जिनेवा स्थित तिब्बत कार्यालय २०१९ से चीन के बढ़ते प्रभाव और हस्तक्षेप के बारे में चिंता जता रहा है। इसके अतिरिक्त, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग की स्विट्जरलैंड की आधिकारिक यात्राओं के दौरान इन मुद्दों पर अपना पक्ष स्पष्ट करने के लिए स्विस संघीय सरकार से कई अपीलें की गईं। १२ फरवरी २०२५ को स्विस संघीय सरकार ने औपचारिक रूप से स्वीकार किया कि तिब्बती और उग्यूर दोनों समुदाय दुनिया भर में चीनी दमन का सामना कर रहे हैं। स्विस प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने स्विस सरकार की इस रिपोर्ट के लिए उसकी प्रशंसा की है और उनके प्रति आभार व्यक्त किया है।

रिपोर्ट संख्या २०.४३३३ एपीके-एन की सहायक संघीय परिषद की रिपोर्ट में ३६ पृष्ठ और १० अध्याय शामिल हैं। इस रिपोर्ट का शीर्षक स्विस संसद द्वारा 'स्विट्जरलैंड में तिब्बती और उग्यूर की स्थिति' रखा गया है। इसका मुख्य विषय स्विट्जरलैंड में तिब्बतियों की स्थिति, विशेष रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और इसके लिए उनकी निगरानी से संबंधित है। यह आधिकारिक रिपोर्ट १५ मार्च २०२१ को संसद द्वारा पारित प्रस्ताव पर प्रतिक्रिया देते हुए तैयार की गई थी।

इस रिपोर्ट के अध्याय तीन में तिब्बतियों और उग्यूरों के लिए स्विट्जरलैंड की शरणार्थी नीतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्याय चार में विदेशों में निर्वासित तिब्बती और उग्यूर समुदायों को निशाना बनाकर चीन के व्यापक निगरानी अभियानों का विवरण दिया गया है। अध्याय पांच में इस बात का परीक्षण किया गया है कि अंतरराष्ट्रीय दमन तिब्बतियों और उग्यूरों के मौलिक अधिकारों, विशेष रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कैसे दुष्प्रभावित करता है। अध्याय छह अंतरराष्ट्रीय दमन से बचाने के लिए

मौजूदा विदेशी और अंतरराष्ट्रीय कानूनी उपायों की पड़ताल करता है। अध्याय नौ अंतरराष्ट्रीय दमन को पहचानने और उसे रोकने के लिए स्विस संघीय सरकार द्वारा उठाए गए उपायों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

यह रिपोर्ट बेसल विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध पर आधारित एक आधिकारिक सरकारी दस्तावेज है। तिब्बतियों और उग्यूरों की भविष्य की सुरक्षा के संबंध में रिपोर्ट इंगित करती है कि स्विट्जरलैंड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन समेत उन सभी देशों को कूटनीतिक रूप से जवाब देगा जो अंतरराष्ट्रीय दमनकारी कार्रवाइयों को स्वीकार करते हैं या उसे सुगम बनाते हैं। इसके अलावा, इसमें कहा गया है कि स्विट्जरलैंड चीन की वर्तमान कार्रवाइयों को बर्दाश्त नहीं करेगा और अधिकारियों के बीच जागरुकता बढ़ाने और पीड़ितों को सहायता प्रदान करने सहित घरेलू कदम उठाएगा।

◆ 22.सीसीपी से युन्नान के दो वरिष्ठ तिब्बती अधिकारी बर्खास्त

२४ फरवरी, २०२५

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) ने युन्नान के दो पूर्व वरिष्ठ तिब्बती अधिकारियों को जांच में 'अनुशासन और कानून के गंभीर उल्लंघन' का दोषी पाए जाने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी से निष्कासित कर दिया। सीसीपी ने २३ फरवरी, २०२५ को इसकी घोषणा की। सामान्य तौर पर इन पूर्व अधिकारियों पर लगाए गए आरोप अस्पष्ट किस्म के है और आमतौर पर चीन हर आरोपी के खिलाफ इसी तरह के आरोप लगाता है। अनुशासन की जांच के लिए चीनी केंद्रीय आयोग और राष्ट्रीय पर्यवेक्षी आयोग ने कहा कि युन्नान में देचेन (दीकिंग) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के पूर्व गवर्नर क्यू जियानक्सिन और पूर्व उप-गवर्नर जंगचुप (जियांग चू) ने 'पार्टी के राजनीतिक अनुशासन का गंभीर उल्लंघन किया', 'पार्टी के प्रति बेईमान और अविश्वासी' थे, और अपने पद का दुरुपयोग कर 'अवैध लाभ' कमाया। पूर्व अधिकारियों द्वारा अपने बारे में दी गई जानकारियों से पता चलता है कि वे तिब्बती हैं। आयोग ने दोनों व्यक्तियों के लिए समान शब्दों का इस्तेमाल किया, जो दर्शाता है कि दोनों के बीच संबंध था। रिपोर्ट में कहा गया है कि, 'प्रकृति गंभीर है और प्रभाव बुरा है' और कहा कि, 'उनके साथ गंभीरता से पेश आना चाहिए।' उन दोनों को पार्टी और सरकारी कार्यालयों से निष्कासित कर दिया गया था। क्यू और जंगचुप के खिलाफ जांच २०२४ की शुरुआत में शुरू हुई, जब जंगचुप ने २९ फरवरी, २०२४ को भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसी के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। १९ मई २०२४ को बर्खास्त देचेन के कार्यकारी उप-गवर्नर जंगचुप (जियांग चू) और ०९ अप्रैल २०२४ को बर्खास्त देचेन के पूर्व गवर्नर क्यू जियानक्सिन को भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसी द्वारा उनके खिलाफ शुरू की गई जांच के बाद प्रिफेक्चर में उनके सरकारी पदों से बर्खास्त कर दिया गया था। चीनी अधिकारियों ने दोनों के खिलाफ और अधिक अभियोजन का संकेत दिया है क्योंकि आयोग का कहना है कि उनके 'संदिग्ध आपराधिक मुद्दों' को 'कानून के अनुसार समीक्षा और अभियोजन के लिए' प्रोक्यूरेटोरेट को भेज दिया गया है। २०२४ में देचेन के कई वरिष्ठ अधिकारियों की चीन की भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसी द्वारा जांच की गई थी। इस साल जनवरी में चीनी सरकारी मीडिया ने घोषणा की कि ग्यालथांग में जन्मे पूर्व गवर्नर देचेन चे द्रला (क्यू झाला) की जांच की जा रही है क्योंकि उन पर 'अनुशासन और कानूनों के गंभीर उल्लंघन का संदेह है।' उन्हें २०१७ में ल्हासा में तैनात किया गया था और बाद में तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) सरकार के अध्यक्ष के रूप में पदोन्नत किया गया था। वर्तमान तिब्बती क्षेत्रों में देचेन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कम प्रसिद्ध है। चीनी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए १७ दिसंबर, २००१ को चीनी अधिकारियों ने १९३३ के जेम्स हिल्टन उपन्यास लॉस्ट होराइजन में शांगरी-ला की काल्पनिक भूमि के नाम पर प्रिफेक्चुर की राजधानी ग्यालथांग का नाम बदलकर शांगरी-ला सिटी (जियांगेलिला) कर दिया था।

◆ 23.प्रतिरोध की खामोश लपटें: तिब्बत के अंदर आत्मदाह करने वाले पहले तिब्बती टेपे की याद

२७ फरवरी, २०२५

धर्मशाला। चीनी दमन के प्रतिरोध में तिब्बत में विरोध के तौर पर आत्मदाह की लहर की शुरुआत २००९ में आज ही के दिन हुई थी। इस दिन को अमदो न्गाबा स्थित कीर्ति मठ के २७ वर्षीय भिक्षु टेपे ने स्थानीय अधिकारियों द्वारा उनके मठ में प्रार्थना समारोह रद्द करने के बाद खुद को आग लगा ली थी। यह तिब्बत के भीतर अहिंसक प्रतिरोध के सबसे चरम रूपों में से एक का पहला उदाहरण था। साथ ही यह तिब्बतियों की धार्मिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता को प्रभावित करनेवाली चीन की दमनकारी नीतियों के खिलाफ तिब्बती समुदाय के भीतर गहरी निराशा को दर्शाता है।

टेपे की कहानी तिब्बतियों में बढ़ते तनाव और क्रूर चीनी दमन, विशेष रूप से २००८ में न्गाबा प्रिफेक्चर में हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद के दमन के विरोध में उठाए गए असाधारण कदम का प्रमाण है। न्गाबा में अधिकारियों द्वारा चलाए गए दमन चक्र के परिणामस्वरूप गर्भवती महिलाओं, बच्चों और किशोर छात्रों सहित कई नागरिकों की मौत हो गई थी।

चीनी अधिकारियों द्वारा तिब्बती नववर्ष के दौरान एक पारंपरिक शोक समारोह रद्द करने के बाद टेपे ने तिब्बती ध्वज और परम पावन दलाई लामा की तस्वीर लेकर खुद को आग लगा ली थी। उनके इस विरोध तरीके पर प्रतिक्रिया देते हुए सैन्य पुलिस ने टेपे के आग की लपटों में घिरे होने के दौरान ही उन्हें गोली मार दी थी। इस तरह के तरीके ऐसे प्रदर्शनों के खिलाफ़ इस्तेमाल किए गए गंभीर उपायों को रेखांकित करता है। बाद में उन्हें गोपनीय तरीके से विभिन्न अस्पतालों में स्थानांतरित किया जाता रहा और उन्हें देखने आनेवाले परिवार और धर्मगुरुओं समेत अधिकांश लोगों से मिलने से रोक दिया गया। बाद में उन्हें गायब ही कर दिया गया। ये घटनाएं चीन की गोपनीयता और ऐसी घटनाओं को संदिग्ध तरीके से निपटाने का निकृष्ट उदाहरण है।

इन घटनाओं के बारे में सूचनाओं को दबा देन, सरकारी मीडिया में इनका न

के बराबर कवरेज और अस्पताल में भर्ती होने के दौरान टेपे से न के बराबर संपर्क करने देना चीनी सरकार के तिब्बत के बारे में सूचना नियंत्रण के व्यापक पैटर्न को दर्शाता है। विदेशी मीडिया की प्रारंभिक रिपोर्टों के बावजूद उनके विरोध का पूरा संदर्भ और परिणाम जनता की नजरों से काफी हद तक छिपा ही रहा।

अब तक तिब्बत में विरोध दर्शाने के रूप में आत्मदाह के १५८ ज्ञात मामले सामने आए हैं। इनमें हालिया मामला २०२२ में ८१ वर्षीय तिब्बती वरिष्ठ नागरिक ताफुन का है। आत्मदाह के दौरान घायल होने के कारण उनकी मौत हो गई। ये विरोध-प्रदर्शन मठवासी भिक्षुओं और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आए आम तिब्बती लोगों द्वारा किए गए हैं। इनमें किसान, शिक्षक, छात्र, उनके माता-पिता और दादा-दादी तक शामिल हैं।

पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) की सरकार ने इन विरोधों के मद्देनजर तिब्बतियों की वैध शिकायतों और आह्वानों पर ध्यान देकर उनका निपटारा करने के बजाय उल्टे सुरक्षा उपायों को बढ़ा दिया है और आत्मदाह को अपराध घोषित कर दिया है। सरकार ने आत्मदाह करने वालों से जुड़े परिवारों, मठों और समुदायों को दंडित करना शुरू कर दिया है। सरकार की इन कार्रवाइयों के बावजूद, आत्मदाह-विरोध जारी है। यह चीनी दमन के तहत धार्मिक स्वतंत्रता, सांस्कृतिक संरक्षण और मानवाधिकारों के बारे में तिब्बती लोगों की गहरे असंतोष को दर्शाता है।

अतीत में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त सहित अंतरराष्ट्रीय निकायों ने चीन से तिब्बती अधिकारों का सम्मान करने और संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों और विदेशी मीडिया के लिए तिब्बती क्षेत्रों में बेरोकटोक प्रवेश की अनुमति देने का आह्वान किया है। कई देशों की सरकारों ने भी स्थिति के बारे में चिंता व्यक्त की है और तिब्बत में संकट को दूर करने के लिए बहुपक्षीय राजनयिक हस्तक्षेप का आह्वान किया है।

आत्मदाह करने वाले तिब्बतियों को अपने तिब्बती भाई-बहनों की अत्यधिक पीड़ा नहीं देख सकनेवाले संवेदनशील बलिदानी के रूप में जाना जाएगा। यह उन अहिंसक वीरों द्वारा अपने जीवन का किया गया उत्कृष्ट बलिदान माना जाएगा। विरोध के इन अद्भुत मिसालों के बावजूद चीनी आधिपत्य में तिब्बत की स्थिति बद से बदतर ही हुई है। यहां पर तिब्बती संस्कृति, भाषा और धार्मिक स्वतंत्रता का व्यवस्थित रूप से संहार निरंतर जारी है। अपनी परंपरा और अस्तित्व के इस संहार की ओर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए हताश तिब्बतियों द्वारा अंतिम उपाय के तौर पर अपने शरीर को आग में उत्सर्ग कर देने जैसे क्रूर कृत्यों के जवाब में चीनी शासन की ओर से केवल निगरानी, जबरन अपने में विलय कर जाने की नीतियां और तिब्बत के पर्यावरण का शोषण और बढ़ा दिया गया है। यह दुखद वास्तविकता इस बात को रेखांकित करती है कि कैसे अहिंसक प्रतिरोध के सबसे चरम रूप भी अंतरराष्ट्रीय शक्तियों को सार्थक कार्रवाई के लिए प्रेरित करने में विफल रहे हैं। और इस तरह चीन के दमनकारी शासन के तहत तिब्बत का भविष्य लगातार अंधकारमय होता जा रहा है।

◆ 24.तिब्बती समुदाय ने यूएनएचआरसी के ५८वें सत्र के शुरू होने पर जिनेवा में विरोध-प्रदर्शन किया, तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन का मुद्दा उठाया

२५ फरवरी, २०२५

जिनेवा, २४ फरवरी २०२५। स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय (टीसीएसएल) ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) के ५८वें सत्र के उद्घाटन के दिन जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय के सामने विरोध-प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में चीनी शासन के तहत तिब्बत में मानवाधिकारों की बिगड़ती स्थिति की निंदा की गई।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क ने अपने उद्घाटन भाषण में अतीत में हुए अत्याचारों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए मानवाधिकारों और कानून के शासन को बनाए रखने की महत्ता को रेखांकित किया। उन्होंने चेतावनी दी कि अनियंत्रित बल का उपयोग, नागरिकों पर हमले और व्यापक दुर्व्यवहार जैसे अधिकारों के अनियंत्रित उल्लंघन फिर से हो सकते हैं। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर, अंतरराष्ट्रीय कानून, यूएनएचआरसी, नागरिक समाज और न्यायिक संस्थाओं सहित अंतरराष्ट्रीय तंत्र ऐसे दुरुपयोगों के खिलाफ आवश्यक सुरक्षा उपाय के रूप में काम करेंगे। तुर्क ने वैश्विक मानवाधिकार उल्लंघनों की निगरानी और रिपोर्टिंग के लिए अपने कार्यालय की प्रतिबद्धता को भी स्वीकार किया। इसके बारे में आगे की जानकारी उनके आगामी वैश्विक सूचना में प्रस्तुत की जाएगी।

तिब्बत ब्यूरो जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र में पक्षधरता अधिकारी फुंत्सोक टोपग्याल ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए तिब्बत में गंभीर होते जा रहे मानवाधिकार संकट की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने कहा कि २४ फरवरी से शुरू हुआ ५८वां यूएनएचआरसी सत्र ०४ अप्रैल २०२५ तक जारी रहेगा। टोपग्याल ने मानवाधिकार के पक्ष में खड़े रहने में स्विट्जरलैंड की भूमिका को स्वीकार किया और ०१ जनवरी २०२५ को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के अध्यक्ष के रूप में उनके चुनाव पर स्विस राजदूत जुर्ग लाउबर को बधाई दी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने स्विट्जरलैंड में तिब्बतियों की स्थिति और उनके सामने आने वाले अंतरराष्ट्रीय दमन पर एक रिपोर्ट को स्विस संघीय परिषद द्वारा मंजूरी दिए जाने का स्वागत किया। इस निर्णय पर १२ फरवरी २०२५ को अंतिम मुहर लगेगी।

टोपग्याल ने कहा, 'आज हम न केवल तिब्बतियों के रूप में, बल्कि अपने चीनी-ईसाई भाइयों और बहनों के साथ चीनी शासन के तहत चल रहे उत्पीड़न के खिलाफ एकजुटता के साथ खड़े हैं।'

उन्होंने ६१वें म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में समता और बहुध्रुवीय विश्व के बारे में चीन के हालिया बयानों की आलोचना की और तर्क दिया कि चीन की घरेलू नीतियां ही उसके इन दावों का खंडन करती हैं। उन्होंने 'डॉक्यूमेंट्री इनसाइड चाइना: द बैटल फॉर तिब्बत' का हवाला देते हुए तिब्बत में गंभीर

दमन पर प्रकाश डाला। इस डॉक्यूमेंट्री में तिब्बत में व्यापक निगरानी, सांस्कृतिक संहार और तिब्बतियों का चीनी संस्कृति और मूल में जबरन विलय करने की नीति को उजागर करती है। रिपोर्ट बताती हैं कि तिब्बती बच्चों को सरकारी बोर्डिंग स्कूलों में रखा जा रहा है जहां मंदारिन शिक्षा की एकमात्र भाषा है। यह तिब्बती भाषा और विरासत के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रही है। कभी तिब्बती आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन के केंद्र रहे मठ अब सख्त सरकारी नियंत्रण में हैं और शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शनों को भयंकर दमन चक्र चलाकर कुचला जा रहा है।

प्रदर्शन के दौरान चीन में धार्मिक उत्पीड़न, विशेष रूप से ईसाइयों के खिलाफ़ उत्पीड़न की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। टॉपग्याल ने कहा, 'चीन में हमारे ईसाई भाई-बहन इसी तरह के उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं।'उन्होंने चीनी सरकार द्वारा धार्मिक स्वतंत्रता के दमन का हवाला दिया, जिसमें गैरकानूनी हिरासत और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को जबरन गायब कर दिया जाना शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार विशेषज्ञों ने पहले भी तिब्बत और पूर्वी तुर्केस्तान में चल रहे दुर्व्यवहारों पर चिंता जताई है। टॉपग्याल ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय, विशेष रूप से यूरोपीय संघ से इन अन्यायों के खिलाफ़ कड़ा रुख अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, 'चीन विदेश में अपनी स्वच्छ छवि पेश करता है, लेकिन इसकी घरेलू नीतियां स्वार्थ और नियंत्रण से प्रेरित हैं। अगर चीन वास्तव में वैश्विक नेतृत्व और समतापूर्ण व्यवहार चाहता है, तो उसे सबसे पहले तिब्बतियों और ईसाइयों सहित अपने लोगों को मौलिक अधिकार प्रदान करने होंगे।'

प्रदर्शन में ८० से अधिक लोगों ने भाग लिया, जिनमें ४० से अधिक चीनी-ईसाई, तिब्बत के फ्रेंच-भाषी समर्थक, तिब्बती समर्थक समूहों के सदस्य, टीसीएसएल के उपाध्यक्ष और कार्यकारी सदस्य, यूरोप में तिब्बती युवा संघ (टीवाईएई) के सह-अध्यक्ष और तिब्बत ब्यूरो जिनेवा के कर्मचारी शामिल थे।

५८वें यूएनएचआरसी सत्र से पहले जिनेवा में तिब्बत ब्यूरो ने संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों में सक्रिय रूप से पक्षधरता अभियान चलाया, उनके समक्ष लिखित बयान प्रस्तुत किया है और आगे भी तिब्बत में चीन के मानवाधिकार उल्लंघन को उजागर करने वाले मौखिक बयान देने की योजना बनाई है। सत्र में मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की सुरक्षा, धार्मिक स्वतंत्रता, आतंकवाद विरोधी नीतियों और भोजन और आवास के अधिकारों सहित प्रमुख वैश्विक मुद्दों को उठाया जाएगा।

◆ 25.यूरोपीय संघ की वैश्विक मानवाधिकार चर्चा की प्राथमिकता में तिब्बत बना हुआ है

०३ फरवरी, २०२५

ब्रुसेल्स। यूरोपीय परिषद ने हाल ही में स्वीकार किए गए निष्कर्षों में २०२५ के लिए अपनी प्रमुख मानवाधिकार प्राथमिकताओं को रेखांकित किया है। यह वैश्विक स्तर पर मौलिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने और उसकी रक्षा करने के लिए यूरोपीय संघ की प्रतिबद्धता को उजागर करता है। इस संदर्भ में तिब्बत की स्थिति उसके लिए महत्वपूर्ण चिंता बनी हुई है।

यूरोपीय परिषद के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि तिब्बत में राय और अभिव्यक्ति की आजादी, संघ बनाने और शांतिपूर्ण सभा जैसे मौलिक स्वतंत्रता के अधिकारों पर प्रतिबंध आज भी गंभीर चिंता के विषय बने हुए हैं।

यह धार्मिक समूहों के अपने बुनियादी मामलों का संचालन करने के अधिकार और विशेष रूप से राज्य के हस्तक्षेप के बिना अपने धार्मिक गुरुओं को स्वतंत्र रूप से चुनने के अधिकार सहित धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध को भी रेखांकित करता है।

निष्कर्ष मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत मामलों की बारीकी से निगरानी करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं और चीन से तिब्बतियों सहित सभी के मानवाधिकारों का सम्मान करने, उनकी रक्षा करने और उन्हें पूरा करने का आह्वान करते हैं।

ब्रुसेल्स में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग ने २०२५ के लिए यूरोपीय परिषद के निष्कर्षों का स्वागत किया है। इसमें यूरोपीय संघ के भीतर और वैश्विक स्तर पर मानवाधिकार चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक दूरदर्शी, व्यापक दृष्टिकोण की रूपरेखा दी गई है और यूरोपीय संघ का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि तिब्बत वैश्विक मानवाधिकार चर्चा की प्राथमिकता में बना रहे।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

तिब्बती युवा पक्षधरता प्रशिक्षण के दौरान ब्लू माउंटेंस सिटी काउंसिल द्वारा तिब्बती ध्वज फहराया गया

कलोन डोल्मा ग्यारी ने पांचवें हिमालय हिंद महासागर राष्ट्र समूह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र में भाग लिया

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने महाकुंभ में नागरिक समाज से संपर्क अभियान चलाया